श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 2 फरवरी 2020 मूल्य : 20 रु.

सम्प्रदाय के आधार तत्त्व और धनावंश

धनावंशी महिलाओं की स्थिति

धनावंश और विष्णु तत्त्व

वैष्णवी धनावंश तिलक

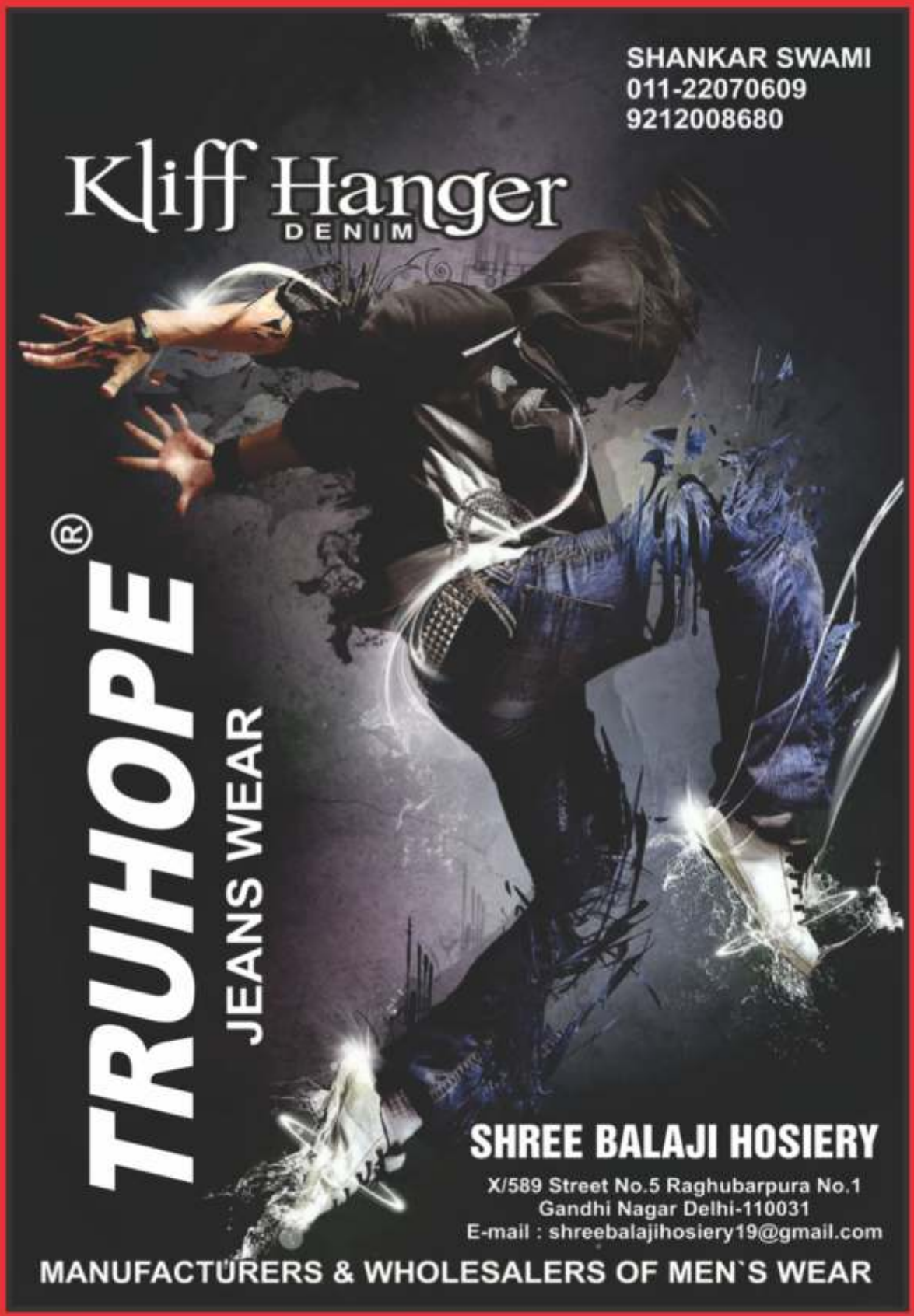
SHANKAR SWAMI
011-22070609
9212008680
Kliff Hanger
DENIM
TRUHOPE®
JEANS WEAR
SHREE BALAJI HOSIERY
X/589 Street No.5 Raghubarpura No.1
Gandhi Nagar Delhi-110031
E-mail : shreebalajihosiery19@gmail.com
MANUFACTURERS & WHOLESALERS OF MEN`S WEAR

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 2 फरवरी 2020 मूल्य : 20/- रुपये

को रघुवीर सरिस संसारा। सीलु सनेहु निबाहनि हारा।।
जेहि जेहि जोनि करमबस भ्रमहीं। तहं तहं ईसु देइ हमहीं।।
सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नात येहु ओर निबाहू।।

मन मन्दिर तुलसी बसे, अयोध्या हो निज धाम।
श्वास-श्वास हनुमत बसे, रोम-रोम श्रीराम।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-
  पहचाने अपने जातीय स्वरूप को/04
* समाचार-/05-06
* आलेख-
  धनावंश और विष्णु तत्त्व/07
  वैष्णव कौन है?/08
  धनावंशी महिलाओं की स्थिति/09
  धर्म का सारतत्त्व/11
  अष्टावक्र महागीता/12
  वैष्णवी धनावंशी तिलक/13
  सम्प्रदाय के आधार तत्त्व और धनावंश/23
  धनावंश की सच्ची बातें/25
* प्रेरणा पुञ्ज-
  उदात व्यक्तित्व के धनी श्री सूरजमलजी स्वामी/14
* विशद परिचर्चा
  वैवाहिक अट्टा-सट्टा घातक है समाज के लिए/19
* आयुर्वेद के उपयोगी नुस्खे/27
* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

पहचानें अपने जातीय स्वरूप को

विचार

प्रत्येक धनावंशी को मेरी जय ठाकुरजी की।

श्री धनावंशी हित नामक मासिक पत्रिका का द्वितीय अंक प्रकाशित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

धनावंशी मित्रों, गौर करें, एक महात्मा ने बहुत सुंदर बात कही है। हर धनावंशी के लिए अति उपयोगी भी है। कहा है कि-बाहरी वस्तुओं को शुद्ध करने के लिए श्रम होता है और भीतर की वस्तुओं को शुद्ध करने के लिए धर्म होता है। हमें खुद का अवलोक करना है कि एक शिष्ट धार्मिक जाति में जन्म लेकर मैं केवल और ही और कामों में लगा हुआ हूं कि बाहर- भीतर की शुद्धि के प्रति भी मेरी कोई चेष्टा रहती है। सब प्राणियों में मनुष्य का जन्म सबसे सुन्दर कहा गया है। इस जन्म में मनुष्य परमात्मा प्राप्ति की सामर्थ्य रखता है। उसे सहज सत्संग मिल सकती है। महापुरुषों का सान्निध्य और सत्साहित्य का अध्ययन मिल सकता है। अज्ञान और अविद्या से छुटकारा पा सकता है। प्रकृति सदैव ही मोहित कर देनेवाले रूप में उपस्थित होती है, पर धर्म पर टिक कर मोह सागर का संतरण किया जा सकता है। मनुष्य के अलावा सभी प्राणी सदैव एक दूसरे से भयभीत रहते हैं। भगवान ने मनुष्य को भय मुक्त होने की सामर्थ्य दी है। वैराग्य-भय से टलने की महौषधी है। वैरागी बंधुओं, अपने सामर्थ्य का अवलोक करें। धनावंश का उदय भक्ति की प्रेरणा से हुआ है। हमें भगवद् भक्त समुदाय की क्षवि बनाए रखनी है।

आने वाले अंकों के लिए आप मुक्त मन से अपने सुझावों से अवगत करवाएं, यह अंक आपको कैसा लगा?

-कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

चितौड़गढ़ में प्रति वर्ष मीरां महोत्सव होता है, दो दिवसीय, कभी तीन दिवसीय । 2012 में मुझे भी आमंत्रित किया गया। मीरां पर मैंने भी अपने उद्गार प्रकट किए और एक भजन भी सुनाया, दोनों ही चीजें उपस्थित जनों को पसंद आई। लगभग पचास विद्वान बाहर से आए हुए थे। सभी आध्यात्मिक विषयों पर लेखन करनेवाले। अधिकांश से मैं परिचित था, कुछ मेरे लिए नए थे। इस महोत्सव में दो स्वामी विद्वान भी थे। एक स्वामी विद्वान से मैंने पूछा, आप कहां से पधारे हैं, तो उन्होंने कहा कि मैं रहता तो जयपुर हूं, पर मैं निम्बार्काचार्य पीठ से दीक्षित हूं और वहां से मेरा गहन जुड़ाव है । मैंने कहा, मैं भी स्वामी हूं-धनावंशी। तब वे विद्वान सज्जन कुछ देर के लिए खामोश हो गए फिर उन्होंने कहा कि जब आप इतना व्यवस्थित बोलते लिखते हैं, तो अपने समाज के बारे में कुछ क्यों नहीं लिखते? आपके समाज की धार्मिक पहचान को सिमटते देखकर दुख होता है। आप धनावंशी भक्तों में श्रेष्ठ कहे जाने वाले धनाजी महाराज के अनुयायी होकर अपने पंथ से इतने विरक्त से क्यों हैं? कभी सलेमाबाद आइए, हमारी पीठ की प्रगति और साहित्य को देखिए। अफसोस आपके धनावंश की एक भी पुस्तक देखने को नहीं मिलती। महोदय, आप लोगों के पिछड़ने का कारण आपका साहित्य न होना है। मुझे पता है, आप साहित्य में अपना एक स्थान रखते हैं, पर कुछ अपने पंथ के लिए भी कीजिए। महंतों को जाग्रत कीजिए। कोई बड़ा स्थान बनाइए। बिना किए, मिटते मिटते पंथ की पूरी पहचान मिट जाएगी। मैंने उन सज्जन को कुछ करने का भरोसा दिलाया। अब जरा आप भी बताओ, प्यारे धनावंशी बंधुओं हम अपने पंथ के लिए क्या करें ?

इंसान दो मामलों में बेबस है, दुख बेच नहीं सकता और सुख खरीद नहीं सकता।

धनावंशी दानदाताओं ने स्वेटर वितरित किए

सुजानगढ़। राजकीय रघुनाथराय जाजोदिया माध्यमिक विद्यालय के जरुरतमंद 51 विद्यार्थियों को प्राचार्य प्रभुदयाल स्वामी (धनावंशी) एवं अध्यापक बसंत कुमार चौधरी ने अपने आर्थिक सौजन्य से स्वेटर वितरित किए। इस अवसर पर अनेक अध्यापक उपस्थित थे। निर्धन एवं जरुरतमंद विद्यार्थियों के प्रति ऐसी सहयोगी भावना हर अध्यापक के मन में रहनी चाहिए।

चूरू-तहसील के घंटेल गांव की सरकारी स्कूल में भी धनावंशी स्वामी शांतिदेवी बरोला ने स्व. श्री सत्यनारायण बरोला की स्मृति में जरुरतमंद विद्यार्थियों को स्वेटर बांटे। स्कूल परिवार की ओर से दानदाता का आभार ज्ञापित किया गया। उल्लेखनीय है कि अनेक धनावंशी दानदाताओं द्वारा समय-समय पर पीड़ित मानवता का सहयोग किया जाता है। सहयोगवृति के लिए प्रत्येक धनावंशी को सदैव तत्पर रहकर कार्य करना चाहिए।

हृदय रोगियों के लिए नई उम्मीद हैं डॉ. बाबूलाल स्वामी

बीकानेर। डॉ. बीएल स्वामी (बाबूलाल स्वामी) धनावंशी स्वामी समाज के गौरव हैं। वे हृदय रोग विशेषज्ञ चिकित्सक हैं। देश की शीर्षस्थ जीबी पंत हॉस्पीटल, नई दिल्ली में अपनी सेवा देने के बाद वे अब बीकानेर स्थित फोर्टिश हॉस्पीटल में हृदय रोग विभाग के प्रभारी हैं। अब तक आठ हजार से अधिक हृदय रोगियों को बिना चीर फाड़ के स्टंट लगाकर उन्होंने एक कीर्तिमान कायम किया है।

हाल ही में आपने बीकानेर में रोटाब्लेशन तकनीक के माध्यम से एंजियोप्लास्टी की। जबकि 75 वर्षीय मरीज पैरालिसिस अटैक का शिकार था। यह तकनीक अब तक अहमदाबाद, हैदराबाद, गुड़गांव, मुम्बई, दिल्ली तथा बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में ही उपलब्ध थी। मरीज की हृदय धमनियों में जमे कैल्शियम को 1.70 लाख चक्कर प्रति मिनट से रोटा की मदद से हटाया तथा स्टंट लगाया।

उधर एक मरीज के पांव से लेकर हृदय तक फंसी लोहे की तार को निकालकर जिंदगी बचाई। उनके इस कृत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। उल्लेखनीय है कि डॉ. बीएल स्वामी अनेक जटिल हृदय रोगियों को माकूल उपचार देकर उन्हें राहत प्रदान कर चुके हैं। डॉ. बीएल स्वामी धनावंश समाज के एक सामान्य परिवार से हैं, तथा उनमें मानवीयता कूट-कूट कर भरी हुई है। उनका पैतृक गांव रामचन्द्रपुरा है जो शाहपुरा (जयपुर) तहसील में है। उनके पिता का नाम चौथमलजी स्वामी है। उन्होंने एमबीबीएस 2006-12 के मध्य बीकानेर के सरदार पटेल मेडीकल कॉलेज से की। तथा पीजी गोरखपुर से की थी। उनके हाथ में यश है। वे प्रसिद्ध डॉ. घनश्यामदास स्वामी नोखा के दामाद हैं।

श्री धनावंशी हित पत्रिका का प्रवेशांक ठाकुरजी को समर्पित

धनावंशी संत श्रीबजरंगदास जी महाराज के श्री राधाकृष्ण मंदिर में श्री जी के चरणों में श्री धनावंशी हित पत्रिका का प्रवेशांक समर्पित किया गया। मंदिर के पुजारी द्वय नारायणदास तथा डॉ पुरुषोत्तम दास ने अर्चना के साथ पत्रिका को भेंट करते हुए कहा कि पत्रिका से धनावंशी समाज की आध्यात्मिक तथा धार्मिक उन्नति जुड़ी हुई है और इससे सामाजिक चेतना भी बढेगी। उन्होंने कहा कि प्रवेशांक की सामग्री उत्साहवर्धक है । सभी धनावंशी स्वामियों के घरों-मंदिरों में यह पत्रिका उपयोगी है।

उल्लेखनीय है कि पत्रिका का सम्पादन हिन्दी राजस्थानी के साहित्यकार डॉ चेतन स्वामी ने किया है। पत्रिका यहां कालूबास से प्रतिमाह प्रकाशित होगी ।

सम्पन्नता मन की अच्छी होती है, धन की नहीं। धन की सम्पन्नता से अहंकार आता है।

समाचार

धनावंशी स्वामी समाज नागौर की कार्यकारिणी की बैठक

विगत 24 नवम्बर को धनावंशी समाज समित नागौर के तत्वावधान में कार्यकारिणी की बैठक एवं स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। बैठक में 70 से अधिक गणमान्य धनावंशी पधारे। प्रारम्भ में नागौर छात्रावास की प्रगति के सम्बन्ध में गहन विचार-विमर्श हुआ तथा यह विचार किया गया कि परिसर की खाली जगह पर निर्माण की कार्ययोजना बनाई जाये। विचार मंथन के बाद तय हुआ कि तहसीलवार समितियों का गठन कर चंदा एकत्रित करने का काम शुरू किया जाये। निर्माण को गति प्रदान करने हेतु सक्रिय होकर काम किया जाये। यह भी तय किया कि सन् 2020 की मई माह में छात्रावास का रजत जयंती समारोह बड़े रूप में मनाया जाये। इस समारोह का आयोजन 2 दिवस तक किया जावे। जिसमें समाज की कुरितियों के निवारण हेतु प्रस्ताव रखे जावे तथा दूसरे दिन पारितोषिक एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जावे। समाज की इतिहास लेखन के सम्बन्ध में भी विचार व्यक्त किये गये। यह भी प्रस्ताव लिया गया कि मई माह के कार्यक्रम में समाज के सभी विद्वानों को आमंत्रित किया जावे। कार्यक्रम का संचालन राधेश्याम गोदारा ने किया।

बिन दहेज विवाह

23 नवम्बर को सरदारशहर के वरिष्ठ अध्यापक श्री जयवीर स्वामी ने अपने सुपुत्र विवेक संग सरस्वती (सुपुत्री डॉ. पुरुषोत्तमदास भूकर श्रीडूंगरगढ़ निवासी) के विवाह में दहेज के रूप में एक रुपया और नारियल लेकर समाज में एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री जयवीरजी धनावंशी समाज के समर्पित व्यक्ति हैं। उन्होंने समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। डॉ. जयवीरजी को इस कृत्य के लिए ढेरों बधाई। कुरितियों में जकड़े धनावंशी स्वामी समाज को उन्होंने यह महत्ती प्रेरणा देने का काम किया है। समाज में अन्य कोई भाई भी अपने सुपुत्र का विवाह दहेज लिए बिना करेगा, श्री धनावंशी हित परिवार उनका आभार ज्ञापित करेगा।

दुर्घटनाग्रस्त परिवार के बारे में सोचें धनावंशी

विगत दिनों सरदारशहर तहसील के सोमासर गांव के श्री इंद्रदास स्वामी तथा उनके साथ उनके दो अन्य रिश्तेदारों की रावतसर के निकट एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इस भीषण दुर्घटना में जहां तीन धनावंशी बंधुओं की मृत्यु हुई वहीं अनेक लोग घायल हो गये। यहां जिन इन्द्रदास स्वामी का उल्लेख किया गया है, वे एक ही भाई थे। उनके पुत्र भी नहीं है, जबकि 6 पुत्रियां हैं। जिनमें दो पुत्रियां भी इस दुर्घटना में घायल हो गई। उनके घर में वे एक ही कमाने वाले व्यक्ति थे। इस दुर्घटना के कारण यह परिवार बेहद मुसीबत में आ चुका है। घर में एक भी व्यक्ति कमाने वाला नहीं है और तिसपर दो गंभीर रूप से घायल पुत्रियों का इलाज किया जा रहा है। इस दारुण स्थित को समझते हुए धनावंशी समाज को इस परिवार की मदद के लिए आगे आना चाहिए तथा धनावंशी स्वामी समाज को अपना एक आपद कोष भी स्थापित करना चाहिए जिससे किसी पीड़ित धनावंशी परिवार की आर्थिक मदद की जा सके।

ऐसी परिस्थितियों में किसी दूसरे समाज की मदद लेना उचित नहीं कहा जा सकता। हम देखते हैं कि अन्य जातियों में आकस्मिक आपदाओं के लिए संस्थाओं में कोष होता है, जिससे तत्काल पीड़ित परिवार की मदद संस्था द्वारा की जानी संभव होती है। हमारा समाज इस विषय में त्वरित ढंग से विचार करें। पूर्व में भी गोलूवाला के निकट ऐसी ही एक दुर्घटना हुई, उसमें भी मदद की आवश्यकता पड़ी।

अवसर और सूर्योदय दोनों में एक समानता है। देर करने वाले इन्हें हमेशा के लिए खो देते हैं।

आलेख

धनावंश और विष्णु तत्त्व

चेतन स्वामी

यह भी कहा गया है कि भगवान विष्णु न्यायकर्ता हैं, वहीं माता लक्ष्मी क्षमा और दया की प्रतीक हैं। भगवान श्री विष्णु छह प्रकार के ऐश्वर्य से युक्त हैं। उनके गुणों में ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, ओज, शक्ति और तेज हैं। वैष्णवों के मुख्य अवतार विष्णु भगवान ही हैं, जबकि राम-कृष्ण आदि उनके अवतार हैं, इसलिए वे भी सूपूज्य हैं। षड ऐश्वर्य (छह गुणों) से सम्पन्न होने के कारण ही विष्णु को भगवान या भगवत कहा जाता है।

श्री धनावंश भक्तिपरक पंथ है। वैष्णव धर्म से उद्भूत इस पंथ के मुख्यदेव श्री विष्णु ही हैं। वे जगत के पालनकर्ता हैं और सर्व ऐश्वर्यमय हैं। हर धनावंशी उन्हें अपना ठाकुर मानता है। ठाकुर कौन हैं-जिनमें सारा ऐश्वर्य हो, सारे धर्म समाहित हों, जो श्री सम्पन्न हों, तथा जो सर्व यश और ज्ञान के आधार हों तथा जिनसे वैराग्य की प्राप्ति हो। ठाकुर वे ही हो सकते हैं जिसमें प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति और समाहार की शक्ति हो। भगवान श्री विष्णु अनंत ब्रह्माण्ड नायक हैं। वेदों, पुराणों आदि आर्ष ग्रंथों में जिन भगवान विष्णु का गुणानुवाद हुआ है, वे ही विष्णु और उनके राम, कृष्ण और नृसिंह जैसे मुख्य अवतार हमारे उपास्य देव हैं। हम उन्हें पूजकर कृत-कृत्य होते हैं। व्यापक परब्रह्म परमात्मा को ही विष्णु कहते हैं।

भगवान विष्णु सर्वदा हैं और सर्वत्र हैं। उन्हें दस इन्द्रियों, एक मन से जाना नहीं जा सकता, उन्हें केवल माना जा सकता है। जानने और मानने की शक्ति भी उनके द्वारा ही प्रदत है। वे विष्णु पूर्णब्रह्म सत्चित्त आनंद स्वरूप हैं। सारी सृष्टि उन्हीं से प्रतिभाषित है। फिर भी वे गुणों से परे तथा रंग-रूप-आकार विहीन हैं। उनमें कोई विकार नहीं है, इसलिए सदैव वे एकरस, अविकारी और अविनाशी हैं। यह समस्त प्रकृति उन्हीं से उद्भूत है तथा विकारी होने से बनती-बिगड़ती रहती है। विशिष्टा द्वैत सिद्धान्त के अन्तर्गत ईश्वर और जीव दो भिन्न सत्ताएं कही गई है। ब्रह्म और जीव में आत्मा-परमात्मा का सम्बन्ध है, किंतु ब्रह्म की विशिष्टता के कारए अद्वैत ब्रह्म की कल्पना की गई है।

भगवान विष्णु जो नारायण रूप में बैकुण्ठ में निवास करते हैं तथा लक्ष्मीजी उनकी सतत् चरण सेवा करती हैं। माता लक्ष्मी भगवान विष्णु की क्रिया शक्ति हैं। लक्ष्मीजी विकास रूपा हैं। यह भी कहा गया है कि भगवान विष्णु न्यायकर्ता हैं, वहीं माता लक्ष्मी क्षमा और दया की प्रतीक हैं। भगवान श्री विष्णु छह प्रकार के ऐश्वर्य से युक्त हैं। उनके गुणों में ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, ओज, शक्ति और तेज हैं। वैष्णवों के मुख्य अवतार विष्णु भगवान ही हैं, जबकि राम-कृष्ण आदि उनके अवतार हैं, इसलिए वे भी सूपूज्य हैं। षड ऐश्वर्य (छह गुणों) से सम्पन्न होने के कारण ही विष्णु को भगवान या भगवत कहा जाता है। ऋग्वेद में भगवान विष्णु से सम्बन्धित कुछ ऋचाएं प्राप्त होती है, जिनमें उनका अत्यंत भव्य और मनोहारी वर्णन हुआ है। माना गया है कि विष्णु लोकों के निर्माता हैं। सभी लोकों में सर्वत्र उनकी ही सत्ता है। भगवान के सभी अवतार विष्णु के ही अवतार समझे जाते हैं। वैदिक देवताओं में विष्णु को ही सर्वोच्च देव की प्रतिष्ठा मिली।

विष्णु को मानने वाले वैष्णव धर्म मतावलम्बी माने गए। वैष्णव धर्म में अवतारवाद और अहिंसा को प्रमुखता मिली। नारदपुराण में कथन है कि भगवान विष्णु केवल भक्ति से ही सन्तुष्ट होते हैं, दूसरे किसी उपाय से नहीं। उनके नाम का बिना श्रद्धा भी कीर्तन अथवा श्रवण कर लेने पर मनुष्य सब पापों से मुक्त हो अविनाशी बैकुण्ठ धाम को प्राप्त कर लेता है। भगवान मधुसूदन संसार रूपी भयंकर एवं दुर्गमवन को दग्ध करने के लिए दावानल रूप हैं।

भगवान विष्णु के अनेक नाम है उन्हें नारायण, अच्युत, अनंत, वासुदेव, जनार्दन, यज्ञेश, कृष्ण, श्रीराम, केशव, कमलाकांत, नृसिंह, वामन, मुरारे आदि नामों से पुकारते हैं। वे अपना नामोच्चार करने वाले भक्तों का उद्धार करते हैं। भगवान विष्णु परम प्रकाश स्वरूप में सम्पूर्ण कार्य कारण रूप जगत में अन्तर्यामी रूप से निवास करते हैं। वे सगुण और निर्गुण दोनों ही रूपों में है तथा जो माया से रहित

सच्चे मित्र के सामने दुख आधा और हर्ष दुगुना प्रतीत होता है।

है। वे ज्ञान स्वरूप, ज्ञानगम्य तथा सम्पूर्ण ज्ञान के एकमात्र हेतु हैं। विष्णु की भक्ति करने वालों के सम्बन्ध में कहा गया है कि पैर उन्हीं के सफल हैं, जो भगवान विष्णु के मंदिर में दर्शन के लिए जे जाते हैं और उन्हीं हाथों को सफल जानना चाहिए जो भगवान विष्णु की पूजा में सदैव तत्पर रहते हैं। आँखें वही सफल हैं जो भगवान का दर्शन करती हैं और जिह्वा वही सफल है जो भगवान के गुणानुवाद में लगी रहती है।

इस संसार में हरि भक्ति से ऊपर कुछ भी नहीं है। वे कान वंदनीय है जो भगवद् कथा की सुधा धारा से परिपूर्ण रहते हैं। संसार सदैव जीव को मोह में डालकर उसकी अधोगति का मार्ग खोलता है, परंतु उसी संसार में ध्यान प्रभु की ओर रहे तो वह मोक्षगामी होकर श्री हरि के चरणों तक पहुंचता है। भगवद् उपासना करनेवाले को भगवान जगदीश्वर अपने परमधाम में स्थान प्रदान कर देते हैं।

सब जानते हैं कि कोटि जन्मों के बाद भगवान कृपा कर मनुष्य शरीर प्रदान करते हैं, कितनी स्थावर, जंगम योनियों में भटकने के बाद ईश्वर कृपा से प्राप्त दुर्लभ मानव जन्म में जो भगवान विष्णु की पूजा नहीं करता, वह स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी चलाता है तथा उसके विवेक का नाश हो चला है।

संतों ने कहा है कि बड़ी विचित्र बात है कि भगवान विष्णु के सहस्रों नामों के बावजूद जो बार-बार विभिन्न योनियों में भटकता है और संसार में आवागमन कर नाना प्रकार के दुख भोगता है। प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि यह शरीर नाशवान है और यह संसार भी तेजी से मिटने में लगा हुआ है। फिर किस आश में अटककर भगवान से विमुख हैं?

भगवान नारद कहते हैं-पाखण्डपूर्ण आचरण का परित्याग कर भगवान श्री विष्णु की आराधना में लग जाएं। धनावंश का साधपन तभी सच्चा साबित होगा, जब हम सबकी प्रीति नारायण में हो जाएगी। ● ●

वैष्णव कौन है?

समस्त विश्व का उपकार करने में ही जो निरंतर कुशलता का परिचय देते हैं, दूसरों की भलाई मानते हैं, शत्रु का भी पराभव देखकर, उनके प्रति दया से द्रवीभूत हो जाते हैं, तथा जिनके चित्त में सबका कल्याण बसा रहता है, वे ही वैष्णव के नाम से प्रसिद्ध हैं। जिनकी पत्थर, परधन और मिट्टी के ढेले में, पराई स्त्री, कूट शाल्मली नामक नरक में, मित्र, शत्रु, भाई तथा बंधुवर्ग में समान बुद्धि है, वे ही निश्चित रूप से वैष्णव के नाम से प्रसिद्ध हैं। जो दूसरों की गुण गाथा से प्रसन्न होते हैं और पराये दोष को ढकने का प्रयत्न करते हैं, परिणाम में सबको सुख देते हैं, भगवान में सदा मन लगाए रहते हैं तथा प्रियवचन बोलते हैं, वे ही वैष्णव के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जो भगवान श्रीकृष्ण के पापहारी शुभ नाम सम्बन्धी मधुर पदों का जाप करते और जय-जय की घोषणा के साथ भगवन्नामों का कीर्तन करते हैं, वे अकिंचन महात्मा वैष्णव के रूप में प्रसिद्ध हैं।

जिनका चित्त श्री हरि के चरणाविंद में निरंतर लगा रहता है, जो प्रेमाधिक्य के कारण जड़ बुद्धि सदृश्य बने रहते हैं, सुख और दुख दोनों ही जिनके लिए समान हैं, जो भगवान की पूजा में दक्ष हैं तथा अपने मन और विनययुक्त वाणी को भगवान की सेवा में समर्पित कर चुके हैं, वे ही वैष्णव के नाम से प्रसिद्ध हैं। मद और अभिमान के गल जाने के कारण जिनका अन्त:करण अत्यंत शुद्ध हो गया है, अहंकार के समूल नाश से जो परम शांत, क्षोभ रहित हो गए हैं तथा देवताओं के विश्वसनीय बंधु भगवान श्रीनृसिंहजी की आराधना करके जो शोक रहित हो गए हैं, ऐसे वैष्णव निश्चय ही उच्च पद को प्राप्त होते हैं।

-साभार : कल्याण (मासिक)

प्यार बांटा तो रामायण लिखी गई और सम्पत्ति बांटी तो महाभारत। कल भी यही सत्य था और आज भी यही सत्य है।

आलेख

धनावंशी महिलाओं की स्थिति

■■■ डॉ. उमेश साध

हमारे जीवन के सामाजिक, आर्थिक, भौतिक, शैक्षिक, पारिवारिक सभी पहलुओं से सम्बन्धित कोई न कोई समस्या अवश्य विद्यमान होती है। लेकिन उन समस्याओं के साथ-साथ उनका समाधान उन्हीं में निहित होता है। हमें उन समस्याओं में विद्यमान उस समाधान को ढूंढना है जिसे पहचान कर हम उस समस्या का स्वत: ही निराकरण कर सकें। हमारा धनावंशी समाज बहुत पुराना है और उसमें समय के साथ-साथ परिवर्तन भी बहुत हुए हैं लेकिन समाज के बहुत से क्षेत्र आज भी ऐसे हैं जिन पर हमें विचारकर उन क्षेत्रों में विकास करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में धनावंशी समाज में महिलाओं की स्थिति क्या है? कितने प्रतिशत महिलाएं शिक्षित है व कितने प्रतिशत अशिक्षित? क्या महिलाएं अपने विचारों को व्यक्त करने में स्वतंत्र है या नहीं?

किसी भी विषय से सम्बन्धित विचारों को व्यक्त करने में तथा उन विचारों को वास्तविकता में अपने जीवन में अपनाने में बहुत अन्तर होता है। जितने आसान तरीके से हम किसी विषय से सम्बन्धित अपनी राय या विचार व्यक्त करते हैं। उतना ही कठिन है उनको समाज व व्यवहार में उतारना। लेकिन इसका मतलब यह नहीं हुआ कि हम किसी भी विषय या समस्या से सम्बन्धित नवीन विचारों को प्राथमिकता ही न देवें। कोई भी सामाजिक कार्य सर्वप्रथम विचार रूप में ही किसी न किसी सामाजिक कार्यकर्ता के मस्तिष्क में आता है। वह कार्यकर्ता अपने उन विचारों को समाज के सामने व्यक्त करता है। समाज के अन्य लोगों को अपने विचारों से अवगत कराकर उनसे विचार-विमर्श कर उस कार्य को समाजोपयोगी समझकर उस कार्य को पूर्ण करने में लग जाता है।

इस प्रकार हमें भी हमारे धनावंशी समाज में विद्यमान समस्याओं से सम्बन्धित विचारों को साकार रूप देने व उन समस्याओं के समाधान हेतु पहल करनी होगी। समस्याएं सब जगह होती है। जीवन के सामाजिक, आर्थिक, भौतिक, शैक्षिक, पारिवारिक सभी पहलुओं से सम्बन्धित कोई न कोई समस्या अवश्य विद्यमान होती है। लेकिन उन समस्याओं के साथ-साथ उनका समाधान उन्हीं में निहित होता है। हमें उन समस्याओं में विद्यमान उस समाधान को ढूंढना है, जिसे पहचान कर हम उस समस्या का स्वत: ही निराकरण कर सकें। हमारा धनावंशी समाज बहुत पुराना है और उसमें समय के साथ-साथ परिवर्तन भी बहुत हुए हैं लेकिन समाज के बहुत से क्षेत्र आज भी ऐसे हैं जिन पर हमें विचारकर उन क्षेत्रों में विकास करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में धनावंशी समाज में महिलाओं की स्थिति क्या है? कितने प्रतिशत महिलाएं शिक्षित है व कितने प्रतिशत अशिक्षित? क्या महिलाएं अपने विचारों को व्यक्त करने में स्वतंत्र है या नहीं? समाज में सामाजिक कार्य करने हेतु महिलाओं को स्वतंत्र वातावरण व प्रोत्साहन मिल रहा है या नहीं? धनावंशी समाज की पढ़ी-लिखी बालिकाओं को विवाह के पश्चात उनकी योग्यता को आगे बढ़ाने के अवसर मिल रहे हैं या नहीं। हमारा समाज बालिका शिक्षा हेतु किस प्रकार की सहायता कर रहा है? उन्हें कैसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उत्साहित कर रहा है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

क्या हमारे समाज द्वारा बालिकाओं व महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम अंक प्राप्त करने या अन्य किसी क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करने पर पुरस्कृत किया जाता है? धनावंशी समाज की महिलाओं से सम्बन्धित इस प्रकार के अनेक सवाल मन में उठते है जिनका समाधान समाज के कार्यकर्ताओं को ढूंढना आवश्यक है। यद्यपि हमारा समाज पुरुष प्रधान रहा है लेकिन वर्तमान समय की परिस्थितियां व वर्तमान समय की आवश्यकताओं को देखते हुए समाज के पुरुषों द्वारा अपनी प्रधानता को दिखाकर एक पहल करनी चाहिए जो हमारे समाज की महिलाओं के उत्थान के लिए बेहद आवश्यक है। पुरुष आगे आयें और प्रयास करें कि महिलाओं को समाज में एक सम्मान मिले। समाज के लिए वो कुछ कर सकें ऐसी स्वतंत्र परिस्थितियों का निर्माण करें। ऐसा प्रयास हमारे धनावंशी समाज में एक

कुशल व्यवहार आपके जीवन का आईना है। इसका आप जितना अधिक इस्तेमाल करेंगे, आपकी चमक उतनी बढ़ जायेगी।

हालांकि हमारे समाज की सभी महिलाएं केवल घरेलु कामकाज तक सीमित नहीं है लेकिन लगभग 60% महिलाएं योग्यवान व गुणवान होकर भी समाज व परिवार के रिवाजों व प्रावधानों की अनुपालना करते हुए एक सीमित क्षेत्र में अपना जीवन यापन कर रही है। हमें इन महिलाओं की प्रतिभा को आगे बढ़ाने हेतु एक प्लेटफार्म देना जरूरी है। क्योंकि वर्तमान समय महिलाओं के लिए बाहरी दुनियां में भी अपनी प्रतिभा को उचित प्रदर्शन कर श्रेष्ठता प्रदान करने का है। उन्हें समाज द्वारा यह अनुमति देनी चाहिए कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण करते हुए सामाजिक कार्यों में भी सम्मिलित होकर समाजहित में कार्य करें।

सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी गुण की श्रेष्ठता होती है। हमारे समाज की बालिकाएं व महिलाएं इसी प्रकार के गुणों से युक्त व योग्यतापूर्ण है। हमें इन बालिकाओं व महिलाओं के लिए समाज में एक ऐसे मंच के निर्माण करने की आवश्यकता है। जहां वो स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को व्यक्त कर सके, अपनी आवश्यकताओं व समस्याओं को बतला सकें। इस मंच पर उनके विचारों को सम्मान मिले तथा उनकी श्रेष्ठता व योग्यता को पहचान कर उन्हें और आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जा सके।

कोई भी कार्य प्राथमिक रूप में बहुत कठिन होता है क्योंकि नवीन कार्य समाज की परम्पराओं व रिवाजों से विपरीत होने के कारण सम्भवत: समाज में इसका विरोध होता है। लेकिन हमें हमारे विचारों को समाज के व्यक्तियों के समक्ष इस तरह व्यक्त करना है कि हमारे विचारों को अंतत: उनका समर्थन मिले। धनावंशी समाज की महिलाओं में अधिकार चेतना हेतु इसी प्रकार का कदम उठाने की आवश्यकता है। जिससे समाज की महिलाओं को जागरूक कर उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु उत्साहित किया जा सके।

वर्तमान समय में महिला केवल घर के कामकाज करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक नारी घर की जिम्मेदारियों को पूर्ण करने के साथ सामाजिक क्षेत्र में भी अच्छा कार्य करने में निपुण है। हालांकि हमारे समाज की सभी महिलाएं केवल घरेलु कामकाज तक सीमित नहीं है लेकिन लगभग 60% महिलाएं योग्यवान व गुणवान होकर भी समाज व परिवार के रिवाजों व प्रावधानों की अनुपालना करते हुए एक सीमित क्षेत्र में अपना जीवन यापन कर रही है। हमें इन महिलाओं की प्रतिभा को आगे बढ़ाने हेतु एक प्लेटफार्म देना जरूरी है। क्योंकि वर्तमान समय महिलाओं के लिए बाहरी दुनियां में भी अपनी प्रतिभा को उचित प्रदर्शन कर श्रेष्ठता प्रदान करने का है। उन्हें समाज द्वारा यह अनुमति देनी चाहिए कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण करते हुए सामाजिक कार्यों में भी सम्मिलित होकर समाजहित में कार्य करें।

धनावंशी समाज की महिलाओं को मार्गदर्शन के साथ-साथ एक अच्छा समर्थन भी मिलना चाहिए ताकि वे समाज में आगे बढ़े, समाज के लिए कुछ कार्य करे व समाज में अपनी प्रतिभा को दिखावें। अगर इस प्रकार का समर्थन व सहयोग समाज के द्वारा बालिकाओं व महिलाओं मिले तो वह दिन दूर नहीं रहेगा जब देश के श्रेष्ठ पदों आईएएस व आरएएस में धनावंशी समाज की बेटियां विद्यमान होगी। सम्पूर्ण समाज के संगठन, सहयोग व वैचारिक एकता से हम हमारे इस लक्ष्य को सहजता व शीघ्रता से प्राप्त कर सकेंगे। जब सम्पूर्ण समाज एक होकर सकारात्मक रूख से काम करने को अग्रसर होगा तो समाज में महिला चेतना को बल प्राप्त होगा। महिला समाज सुदृढ़ होगा। नारी सबल होगी तो समाज सशक्त होगा।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास-रजत नग पगतल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

आजकल बचपन वाले खिलौने पूछ रहे हैं कि जब लोग तुम्हारे साथ खेलते हैं ता कैसा लगता हैं?

विचार

धर्म का सारतत्त्व

एक गौ, एक वस्त्र, एक शैय्या और एक स्त्री को कभी अनेक पुरुषों के अधिकार में नहीं देना चाहिए, क्योंकि वैसा करने पर दान का फल दाता को नहीं मिलता। जो ब्राह्मण और गाय को आहार देते समय किसी को-मत दो, ऐसा कहकर मना करता है, वह सौ बार पशु-पक्षियों की योनि में जन्म लेकर अन्त में चाण्डाल होता है। ब्राह्मण का, देवता का, दरिद्र का और गुरु का यदि धन चुरा लिया जाये तो वह स्वर्गवासियों को भी नीचे गिरा देता है। जो धर्म का तत्त्व जानना चाहते हैं उनके लिए वेद मुख्य प्रमाण है, धर्मशास्त्र दूसरा प्रमाण है और लोकाचार तीसरा प्रमाण है।

महाभारत में जब युधिष्ठर ने भगवान श्रीकृष्ण से सम्पूर्ण धर्मों का सारतत्त्व जानना चाहा तब भगवान ने कहा कि मनुजी ने जो धर्म के सारतत्त्व का वर्णन किया है, वह पुराणों के अनुकूल और वेद के द्वारा समर्थित है। उसी का मैं वर्णन करता हूँ, सुनो- अग्निहोत्री द्विज, कपिला गौ, यज्ञ करने वाला पुरुष, राजा, संन्यासी और महासागर-ये दर्शनमात्र से मनुष्य को पवित्र कर देते हैं। इसलिए सदा इनका दर्शन करना चाहिए। एक गौ एक को ही दान में देनी चाहिए, बहुतों को नहीं, यदि वह गौ बेच दी गई तो वह दाता की पीढ़ियों को पाप देती है। एक गौ, एक वस्त्र, एक शैय्या और एक स्त्री को कभी अनेक पुरुषों के अधिकार में नहीं देना चाहिए, क्योंकि वैसा करने पर दान का फल दाता को नहीं मिलता। जो ब्राह्मण और गाय को आहार देते समय किसी को-मत दो, ऐसा कहकर मना करता है, वह सौ बार पशु-पक्षियों की योनि में जन्म लेकर अन्त में चाण्डाल होता है। ब्राह्मण का, देवता का, दरिद्र का और गुरु का यदि धन चुरा लिया जाये तो वह स्वर्गवासियों को भी नीचे गिरा देता है। जो धर्म का तत्त्व जानना चाहते है उनके लिए वेद मुख्य प्रमाण है, धर्मशास्त्र दूसरा प्रमाण है और लोकाचार तीसरा प्रमाण है। जिस देश में चारों वर्णों तथा उनके अवान्तर भेदों का जो आचार पूर्व परम्परा से चला आता है, वही उनके लिए सदाचार कहलाता है। इस देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के पास जाकर भूमण्डल के सम्पूर्ण मनुष्यों को अपने-अपने आचार की शिक्षा लेनी चाहिए।

सदाचार, अहिंसा, सत्य, शक्ति के अनुसार दान तथा यम और नियमों का पालन ही मुख्य धर्म है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों का गर्भाधान से अन्त्येष्टी पर्यन्त सब संस्कार वेदोक्त विधियों और मंत्रों के अनुसार कराना चाहिए, क्योंकि संस्कार इहलोक और परलोक में भी पवित्र करने वाला होता है। गर्भाधान संस्कार में किये जाने वाले हवन के द्वारा और जातकर्म, नामकरण, चूड़ाकरण, यज्ञोपवीत वेदाध्ययन, वेदोक्त व्रतों के पालन, स्नातक के पालने योग्य व्रत, विवाह, पंच महायज्ञ के अनुष्ठान तथा अनन्य यज्ञों के द्वारा इस शरीर को परब्रह्म की प्राप्ति के योग्य बनाया जाता है। जिससे न धर्म का लाभ होता हो, न अर्थ का तथा विद्या प्राप्ति के अनुकूल सेवा भी नहीं करता हो, उस शिष्य को विद्या नहीं पढ़ानी चाहिए। जिस पुरुष से लौकिक, वैदिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ हो, उस गुरु को पहले प्रणाम करना चाहिए। अपने दाहिने हाथ से गुरु का दाहिना चरण और बायें हाथ से उनका बांया चरण पकड़कर प्रणाम करना चाहिए। गुरु को एक हाथ से कभी प्रणाम नहीं करना चाहिए।

गौरव में दस उपाध्यायों से बढ़कर एक आचार्य, सौ आचार्यों से बढ़कर पिता, सौ पिता से बढ़कर माता है। किन्तु जो ज्ञान देने वाले गुरु है, वे इन सबकी अपेक्षा अत्यंत श्रेष्ठ हैं। गुरु से बढ़कर न कोई हुआ और ना ही होगा। इसलिए मनुष्य को अपने गुरु को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिए। गुरुओं की सेवा सुश्रुषा करनी चाहिए, इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि गुरुजनों के अपमान से नरक में गिरना पड़ता है। जो निरन्तर अपने गुरु को मान-सम्मान प्रदान करता है, उससे परमात्मा प्रसन्न रहते है। गुरुओं का अपमान करने वाला कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता।

मैं ही गलत हूँ यह बात सही इंसान ही मानेगा।

अष्टावक्र महागीता

-मांगीलाल स्वामी (कड़वा), सुजानगढ़

यह नियम था कि उससे जो शास्त्रार्थ करेगा उसे इस शर्त को मानना होगा कि हारने वाले को नदी में डूबना होगा। वह बहुतों को नदी में डूबा चुका था। अष्टावक्र का इसी बन्दी के साथ शास्त्रार्थ हुआ। उनके बीच जो शास्त्रार्थ हुआ वो यहाँ नहीं लिख रहा हूँ। पाठक अष्टावक्र गीता पढ़ ले। बन्दी शास्त्रार्थ में हार गया। बन्दी बोला महाराज मुझे जल में डूबने का कोई भय नहीं है क्योंकि मैं वरूण का पुत्र हूँ।

उदालक मुनि के एक पुत्र श्वेतकेतु व एक शिष्य कोहड़ थे। कोहड़ ने अपने गुरु की बहुत सेवा की तो गुरु ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री सुजाता का विवाह कोहड़ से कर दिया। कुछ समय पश्चात सुजाता गर्भवती हुई। एक बार कोहड़ मुनि वेद पाठ कर रहे थे तो गर्भ का बालक बोला पिताजी रातभर वेद पाठ करते हैं फिर भी ये ठीक से शुद्ध नहीं कर पाते। पिता को यह अपमान लगा व उन्होंने गर्भ के बालक को श्राप दिया कि तूं पेट में ही ऐसी टेढ़ी बात करता है अत: आठ जगह से टेडा उत्पन्न होगा। बालक पैदा हुआ तो आठ जगह से टेडा होने के कारण उसका नाम अष्टावक्र रखा गया।

आर्यावर्त में जनक नाम के कई राजा हुए हैं उन्हीं में से कोई एक जनक ने ब्राह्मणों के शास्त्रार्थ का आयोजन किया। सारे आर्यावर्त भारत के विद्वान ब्राह्मण वहां इकट्ठे हुए। अष्टावक्र भी अपने मामा श्वेतकेतु को लेकर वहां गये। उनको देखकर सब विद्वान हंसने लगे तो अष्टावक्र ने कहा हे चक्रवति सम्राट जनक हम तो यहां विद्वानों की सभा में आये थे परन्तु ये तो चमारों की सभा है। ये चाम देखते है ज्ञान नहीं देखते।

राजा जनक उनकी बात से प्रभावित हुए व परीक्षा लेने की मंशा से पूछा–मुनिवर जो पुरुष तीस अवयव, बारह अंश, चौबीस पर्व और तीन सौ साठ आरों वाले पदार्थ को जानता है वहा बड़ा विद्वान है। अष्टावक्र ने कहा जिसमें पक्ष रूप चौबीस पर्व, ऋतुरूप छ: नासि, मास रूप बारह अंश, दिन रूप तीन सौठ अरे हैं, वह निरन्तर घूमनेवाला संवत्सर रूप कालचक्र आपकी सहायता करे।

जनक ने फिर कहा–सोने के समय कौन नेत्र नहीं मूंदता। जन्म लेने के बाद किसमें गति नहीं होती? हृदय किसमें नहीं है? और वेग से कौन बढ़ता है। अष्टावक्र ने कहा–मछली सोने के समय नेत्र नहीं मूंदती। अंडा उत्पन्न होकर गति नहीं करता, पत्थर में हृदय नहीं है और नदी वेग से बढ़ती है। राजा जनक उनकी बातों से बहुत प्रभावित हुए व बोले आप दिखते भले ही बालक हो मैं आपको वृद्ध ही मानता है। आप दिखते भले ही मनुष्य हो, मैं आपको देवता ही मानता हूँ। राजा जनक के दरबार में बन्दी नाम का एक बहुत विज्ञान ब्राह्मण था। जिसका यह नियम था कि उससे जो शास्त्रार्थ करेगा उसे इस शर्त को मानना होगा कि हारने वाले को नदी में डूबना होगा। वह बहुतों को नदी में डूबा चुका था। अष्टावक्र का इसी बन्दी के साथ शास्त्रार्थ हुआ। उनके बीच जो शास्त्रार्थ हुआ वो यहाँ नहीं लिख रहा हूँ। पाठक अष्टावक्र गीता पढ़ ले। बन्दी शास्त्रार्थ में हार गया। बन्दी बोला महाराज मुझे जल में डूबने का कोई भय नहीं है क्योंकि मैं वरूण का पुत्र हूँ। आज ये अष्टावक्र भी बहुत दिनों से अपने डूबे हुए पिता कोहड़ के दर्शन करेंगे। इतने में ही डूबे हुए सब ब्राह्मण व कोहड़ वरूण देव की कृपा से जल से बाहर आ गये और बन्दी जल में कूद गया। कोहड़ अष्टावक्र व श्वेतकेतु को लेकर अपने आश्रम में आये। कोहड़ ने अष्टावक्र से कहा तुम इस समंगा नदी में डूबकी लगाओ। जैसे ही अष्टावक्र ने समंगा नदी में प्रवेश कर डूबकी लगायी उसके सब अंग सीधे हो गये।

अष्टावक्र ने जो उपदेश जनक की सभा में दिया था उसे आज हम अष्टावक्र गीता के नाम से जानते हैं। भगवत गीता यानी भगवान के गीत उसी तरह अष्टावक्र गीता यानी अष्टावक्र के गीत। मैं अपने वैष्णव बैरागी धनावंशी बंधुओं से ये निवेदन करता हूँ कि अपने घर में अष्टावक्र गीता अवश्य रखें। अष्टावक्र गीता की तरफ बंधुओं का ध्यान खींचना ही इस लेख का उद्देश्य है।

यकीन और उम्मीद लक्ष्य को आसान नहीं, संभव बनाते हैं।

वैष्णवी धनावंशी तिलक

■■■ अशोक सिंवर, शेरेरां

वैदिक सभ्यता के अनुयायी माथे पर कुछ चिन्ह लगाते हैं, जिसे तिलक कहा जाता है। तिलक अनेक प्रकार के होते हैं, कुछ राख द्वारा बनाये हुए, कुछ मिट्टी से, कुछ कुम-कुम आदि से। माथे पर राख द्वारा चिह्नित तीन आड़ी रेखाऐं दर्शाती हैं की लगाने वाला शिव-भक्त है। नाक पर तिकोन और उसके ऊपर V चिह्न यह दर्शाता है कि लगाने वाला विष्णु-भक्त है। यह चिह्न भगवान विष्णु के चरणों का प्रतीक है, जो विष्णु मन्त्रों का उच्चारण करते हुए लगाया जाता है। भक्त धन्ना जी के अनुयायी भी वैष्णव मत को मानने वाले होते हैं इनके द्वारा भी गोपी-चन्दन तिलक लगाया जाता है। गोपी-चन्दन (मिट्टी) द्वारका से कुछ ही दूर एक स्थान पर पायी जाती है। इसका इतिहास यह है कि जब भगवान इस धरा-धाम से अपनी लीलाएं समाप्त करके वापस गोलोक गए तो गोपियों ने इसी स्थान पर एक नदी में प्रविष्ट होकर अपने शरीर त्यागे। वैष्णव इसी मिटटी को गीला करके विष्णु-नामों का उच्चारण करते हुए, अपने माथे, भुजाओं, वक्ष-स्थल और पीठ पर लगाते हैं। तिलक हमारे शरीर को एक मॉदिर की भाँति अंकित करता है, शुद्ध करता है और बुरे प्रभावों से हमारी रक्षा भी करता है। इस तिलक को हम स्वयं देखें या कोई और देखे तो उसे स्वत: ही श्री कृष्ण का स्मरण हो आता है। गोपी चन्दन तिलक के माहात्म्य का वर्णन विस्तार रूप में गर्ग-संहिता के छठवें स्कंध, पन्द्रहवें अध्याय में किया गया है। उसके अतिरिक्त कई अन्य शास्त्रों में भी इसके माहात्म्य का उल्लेख मिलता है।

बायीं हथेली पर थोड़ा सा जल लेकर उस पर गोपी-चन्दन को रगड़ें। तिलक बनाते समय पद्म पुराण में वर्णित निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें-

ललाटे केशवं ध्यायेन नारायणम् अथोदरे
वक्ष-स्थले माधवम् तु गोविन्दम कंठ-कुपके
विष्णुम् च दक्षिणे कुक्षौ बाहौ च मधुसूदनम्
त्रिविक्रमम् कन्धरे तु वामनम् वाम पार्श्वके
श्रीधरम वामबाहौ तु ऋषिकेशम् च कंधरे
पृष्ठे-तु पद्मनाभम च कत्यम् दमोदरम् न्यसेत
तत प्रक्षालन-तोयं त वसुदेवेति मूर्धनि।

यथा-

माथे पर -केशवाय नम:, नाभि के ऊपर - नारायणाय नम:
वक्ष-स्थल - माधवाय नम:, कंठ -गोविन्दाय नम:
उदर के दाहिनी ओर - विष्णवे नम:, दाहिनी भुजा -मधुसूदनाय नम:
दाहिना कन्धा -त्रिविक्रमाय नम:, उदर के बायीं ओर -वामनाय नम:
बायीं भुजा -श्रीधराय नम:, बायां कन्धा -ऋषिकेशाय नम:
पीठ का ऊपरी भाग -पद्मनाभाय नम:, पीठ का निचला भाग -दामोदराय नम:
अंत में जो भी गोपी-चन्दन बचे उसे वासुदेवाय नम: का उच्चारण करते हुए शिखा में पोंछ लेना चाहिए।

पद्म पुराण में एक और स्थान पर वाम पार्श्वे स्थितो ब्रह्मा
दक्षिणे च सदाशिव: मध्ये विष्णुम् विजनियात तस्मान् मध्यम न लेपयेत

तिलक के बायीं ओर ब्रह्मा जी विराजमान हैं, दाहिनी ओर सदाशिव परन्तु सबको यह ज्ञात होना चाहिए कि मध्य में श्री विष्णु का स्थान है। इसलिए मध्य भाग में कुछ लेपना नहीं चाहिए। **वैष्णव तिलक का महत्व**-वैष्णव तिलक का महत्व अनेक शास्त्रों एवं ग्रंथो में मिलता है। गर्ग संहिता के अनुसार जो मनुष्य प्रतिदिन गोपी-चंदन का वैष्णव तिलक धारण करता है। उसे एक हजार अश्वमेघ यज्ञों तथा राजसूय यज्ञों का फल प्राप्त होता है। इस तिलक को धारण करने वाले को समस्त तीर्थ स्थानों में दान देने तथा व्रत पालन करने का फल मिलता है। साथ ही वह जीवन में परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। बताया यह भी जाता है कि प्रतिदिन गोपी-चंदन से वैष्णव तिलक धारण करने वाला पापी मनुष्य भी भगवान कृष्ण के धाम, गोलोक वृन्दावन को प्राप्त होता है।

परमात्मा की तस्वीर लगाइये मन के कक्ष में, फिर सारे फैसले होंगे आपके पक्ष में।

उदात व्यक्तित्व के धनी श्री सूरजमलजी स्वामी, नेछवा

प्रेरणा पुञ्ज

चेतनदास धनावंशी (चोयल)

मन, कर्म, वचन से प्रभु भक्त थे–श्री सूरजमलजी स्वामी। उनकी जैसी उदारता विरल ही व्यक्तियों में होती है। सूझबूझ के धनी श्री सूरजमलजी हर किसी का सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहते, उनके जाने से धनावंशी समाज में एक तरह की रिक्तता पैदा हुई है।

धनावंशी स्वामी समाज में अनेक विभूतियां हुई हैं। इनमें एक महामानव थे, नेछवा के श्री सूरजमलजी स्वामी। एक व्यक्ति के चरित्र में जितने सद्गुण हो सकते हैं, वे सभी सूरजमलजी में थे। सूरजमलजी के पूर्वजों का गांव उदयपुरवाटी के निकट इन्द्रपुरा था। वे जाति से बिजारणिया स्वामी थे। वहां से तीन परिवार श्रीडूंगरगढ़ के आडसर, (जो गोपालदासजी स्वामी का परिवार अब श्रीडूंगरगढ़ में बसता है।) सुजानगढ़ के शोभासर तथा कुमास (सीकर) आकर बस गया। सूरजमलजी के दादा कुमास से नेछवा आकर बस गए। संवत् 1990 कार्तिक सुदी एकम् अर्थात् दीपावली के दूसरे दिन (रामराम के दिन) कीर्ति पुरुष सूरजमलजी का जन्म नेछवा में हुआ। वे बाल्यकाल से कुशाग्र बुद्धि बालक थे। उनके बाल्यकाल के अनेक प्रसंग चर्चित हैं। वे जब चौदह वर्ष के थे तो उन्होंने गांव के किसी अग्रवाल वैश्य के मृत्यु अवसर पर दिए जाने वाले पेटिया (अन्न, चीनी आदि) को लेने से इन्कार कर दिया और अपने स्वाभिमान का प्रथम परिचय दिया। उन्होंने अपने परिवार में किसी भी प्रकार की दान वस्तु तथा वणिकों के मृत्युभोज में जीमने की मनाही कर अपनी गौरव गरिमा स्थापित की।

ईमानदारी तथा उद्यमशीलता से उन्होंने पर्याप्त धन राशि कमाई तथा उदारभाव से जनहितार्थ खर्च भी किया। उनका नियम था, प्रतिदिन चार बजे ब्रह्ममूहूर्त में उठकर स्नान–ध्यान कर उनेक मंदिरों में भगवद् दर्शनार्थ जाते तथा वहां भगवान के चरणों में राशि अर्पण करना कभी नहीं भूलते। वे ईश्वर के सामने एक ही अरदास करते कि मुझे सदैव सद्मार्ग पर चलाए रखना। वे सदाचारी भगवद् भक्त थे। दया और करुणा के पुंज थे। हरि किसी दुखी को देखकर द्रवित हो जाते। कोई उनके समक्ष अपनी मुसीबत और सहयोग के लिए अपनी बात प्रकट करता उससे पहले वे उसकी भावना समझ जाते। गुप्त रूप से मदद करना उनका स्वभाव था।

उनके जीवन का एकमात्र ध्येय था–सेवा। वे 13 वर्ष तक नेछवा पंचायत के सरपंच तथा 1978, 1982 तथा 1999 के पांच–पांच वर्षों के काल में निर्वाचित सरपंच रहे। 28 वर्षों तक अपने सरपंच काल में उन्होंने न्यायप्रिय ढंग से कार्य किया। जीवन में मान–सम्मान को ठेस पहुंचाने वाला कोई कार्य उन्हें पसंद नहीं था। गांव की न जाने कितनी निर्धन बालिकाओं के विवाह में उनका अतुल्य सहयोग रहा। छोटी और अंतज्य जातियों के हरेक कार्य में वे मुक्त हस्त से अपना योगदान करते। सभी जानते हैं–नेछवा क्षेत्र की बावरी जाति को उन्होंने स्वाभिमानपूर्वक रहना सिखाया। सभी बावरी जाति के लोग उनकी अथाह इज्जत करते थे। उन्होंने अपने गांव में शिष्टता का वातावरण कायम किया। गांव की हरेक जाति का व्यक्ति उनकी इज्जत किसी दयालु नगरसेठ की भांति करता था।

किसी भी अवस्था में उन्होंने अपने सद् सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया। जीवन में हलकेपन को पास भी नहीं फटकने दिया। उनका राजनीतिक जीवन भी सुचितापूर्ण रहा। लोगों के लिए वे बहुत उदार थे किंतु स्वयं के प्रति बेहद किफायती। अपनी विलासिता पर उन्होंने कभी कुछ खर्च नहीं किया।

उनमें जातीय अभिमान सदैव रहा। धनावंशी स्वामी समाज की हर संस्था में उनका मुक्तहस्त योगदान रहा। कुछ संस्थाओं में उन्होंने कमरे भी करवाए। धनावंश के प्राचीन इतिहास की भी उन्हें भरपूर जानकारी थी। वे धनाजी महाराज की भक्ति से चमत्कृत थे।

विगत 20 अक्टूबर 2019 को वे अनंत में विलीन हो गए। वे 86 वर्ष के थे। उनका जीवन बेदाग, उज्वल और प्रेरणीय रहा। वे न्यायप्रिय थे। एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति के सभी गुण उनके व्यक्तित्व में समाहित थे। धनावंशी स्वामी समाज सदैव अपने पंथ के श्रेष्ठ मानवी को याद करता रहेगा।

वेद पढ़ना बहुत ही आसान है।
पर किसी की वेदना को पढ़ना आसान नहीं है।

Maths & Rea. के दम पर सर्वाधिक सलेक्शन
All new batch Start...

MATHS &
REASONING
By H.D.SWAMI

पटवार All Sub.

राज. दिल्ली पुलिस All Sub.

SSC | रेलवे All Sub.

H.D. SWAMI ACADEMY
Gurudwara ATM JNV
9413061603

शुभकामनाओं सहित : हरिदास स्वामी, बीकानेर

Reg. No. : A/2978/Surat

धनावंशी बैरागी स्वामी समाज

सूरत (गुजरात) द्वारा आयोजित

चतुर्थ क्रिकेट प्रतियोगिता DPL-4

DPL-4

दिनांक : 16, 17, 18, 19 जनवरी 2020

जी.बी. पटेल क्रिकेट ग्राऊण्ड, जियाव-भेस्ताव रोड़, श्री कैलास मानस स्कूल के पीछे, भेस्ताव, सूरत

के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करता हैं।

धनावंशी बैरागी स्वामी समाज, सूरत कार्यकारिणी 2019-20

रामनिवास पूनियां
अध्यक्ष
M.: 9979395207

देवीदत्त स्वामी
कोषाध्यक्ष
M.: 9227485041

विकास स्वामी
सचिव
M.: 9374735031

पवन पूनियां
प्रचार मंत्री
M.: 9586250611

दयालप्रसाद स्वामी
उपाध्यक्ष
M.: 9374888306

रामचंद्र स्वामी
सहकोषाध्यक्ष
M.: 9913511201

जगदीश स्वामी
सहसचिव
M.: 7600011931

सोहनदास स्वामी
प्रचार मंत्री
M.: 9328074557

धनावंशी स्वामी समाज, सूरत

द्वारा आयोजित

चतुर्थ क्रिकेट प्रतियोगिता DPL-4

Title Sponserd By

KOMAL CUP

Tournament Sponser
Komal Fashion, Surat

Tournament Co-Sponser :
Bhukar Pariwar, Surat

आयोजक : धनावंशी समाज क्रिकेट कमेटी, सूरत

M.: 9898965701, 9724072577, 9723433913, 9724958076

जी.बी. पटेल क्रिकेट ग्राऊण्ड, जियाव-भेस्तान रोड़, श्री कैलास मानस स्कूल के पीछे, भेस्तान, सूरत

दिनांक : 16, 17, 18, 19 जनवरी 2020

Reg. No. : A/2978/Surat

धनावंशी वैरागी स्वामी समाज, सूरत कार्यकारिणी 2019-20

रामनिवास पूनियां अध्यक्ष	देवीदत्त स्वामी कोषाध्यक्ष	विकास स्वामी सचिव	पवन पूनियां प्रचार मंत्री
दयालप्रसाद स्वामी उपाध्यक्ष	रामचंद्र स्वामी सहकोषाध्यक्ष	जगदीश स्वामी सहसचिव	सोहनदास स्वामी प्रचार मंत्री

DPL-4

SH	TEAM NAME	CAPTAIN	SPONSOR	FARM NAME
1	R.K. SPORTS	DHANRAJ SWAMI	OMKAR DAS SWAMI	OMKAR DAS SWAMI
2	PAYAL BROTHERS	RAMESH SWAMI	SUNIL PUNIYA	SUNIL PUNIYA
3	JAI GOGA XI	ARJUN SWAMI	SOHAN SWAMI	SHREE RAM FASHION
4	DHETARWAL SUPER KINGS	RADHEY SWAMI	PANNA LAL SWAMI	JAY VEER CREATION
5	BALAJI KINGS XI	KESAV SWAMI	HARI RAM SWAMI	MUND CONTRACTORS CO.
6	DADO JI CLUB	SITARAM SWAMI	SITARAM SWAMI	LIFE TIME FASHION
7	MADAN GOPAL XI	JUGAL SWAMI	NARAYAN DAS SWAMI	FAGODIYA TEXO FAB
8	S G EXPORT	RAVI POONIYA	RAVI POONIYA	SHREE S G EXPORT
9	SHIV GORKH XI	MANGILAL JI	JAGDEES JI SWAMI	MAHADEV CANVASSING
10	BHAI BANDHU XI	BABU LAL JI SWAMI	DAMODHAR PRASADH SWAMI	DAMJI & SHREE BALAJI GARMENTS
11	SHREE BALAJI XI	MANOHAR SWAMI	NAVRATAN JI	MONIKA SILKS MILKS
12	YUVA STARS	OM DAS SWAMI	BHIMDAS SWAMI	KHUSHI CREATION
13	SOBHASAR CLUB	SURENDHAR SWAMI	RADHESHYAM SWAMI	GEETA SAREE
14	SURAT XI	KAILASH JI SWAMI	KASER DAS SWAMI	SUBH LAXMI FASHION

।।श्री ठाकुरजी।।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम

एम.डी.एस.विद्या निकेतन

उच्च माध्यमिक विद्यालय

465 आरडी, 1 आरएम, बीकानेर

कला संकाय

विज्ञान संकाय

कृषि संकाय

M.: 9001972929
9828345858

श्रीकृष्ण स्वामी

पुत्र : श्री बृजलालजी जाखड़
गाँव खारिया कनीराम (चूरू)
हाल-राणेर (बीकानेर)

जे.डी

आर्ट्स एवं साईंस कॉलेज

465 आरडी, 1 आरएम, बीकानेर

स्वामी फार्म हाऊस

9 एसएलडी,
राणेर (बीकानेर)

वैवाहिक अट्टा-सट्टा घातक है समाज के लिए

विशद परिचर्चा

इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा में श्री राधेश्याम स्वामी नागौर, लालचन्द स्वामी धोलिया, पुखराज स्वामी राठील, श्रीरामदास स्वामी गुसांईसर, श्री प्रेमदास स्वामी खिंयाला, श्री श्रीधर स्वामी सुजानगढ़, श्री सुरेन्द्रकुमार बेनीवाल दोतीणा ने भाग लिया तथा परिचर्चा का संचालन चेतन स्वामी ने किया।

चेतन स्वामी के विचार

हमारे सनातन धर्म के सोलह संस्कारों में विवाह एक प्रमुख संस्कार है। विवाह के सम्बंध में सदैव सुयोग्य वर और गुणवान-शीलवान कन्या की बात कही गई है और विवाह नामक संस्था की सुदृढ़ता के लिए इसे सात जन्मों का बंधन भी कहते हैं। पर, वही विवाह अगर हाल के वर्षों में शुरु हुई एक विकृत परिपाटी अट्टा-सट्टा का शिकार हो कर टूट जाए तो इसमें दोष किसका है और इस नई वैवाहिक परम्परा को रोका कैसे जा सकता है? इस पर धनावंशी बंधु अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। प्रारम्भ में थोड़े से विचार मेरे।

* अट्टा-सट्टा वैवाहिक समाधान नहीं है। यह एक गलत परम्परा है जो हाल के वर्षों में अज्ञानतावश प्रारम्भ हुई है। अट्टा-सट्टा के द्वारा वर-वधू दोनों के अरमानों पर पानी फिरता है।
* माता-पिता को अपने पुत्र और पुत्री का विवाह देरी से नहीं करना चाहिए। वैवाहिक उम्र होते ही सुयोग्य वर-वधू की तलाश प्रारम्भ कर देनी चाहिए।
* हमारे धनावंशी समाज में लड़के और लड़कियों की तादाद में अंतर नहीं है। यानी यह नकली हव्वा फैलाया हुआ है कि लड़किया संख्या में कम है।
* हर माता-पिता को यह सघन चेष्टा करनी चाहिए कि वे समान रूप से अपने पुत्र और पुत्री को योग्य बनाए। योग्य लड़के और सुयोग्य कन्या के लिए रिश्तों की भरमार रहती है। उन्हें अट्टा-सट्टा जैसा कार्य नहीं करना पड़ता।
* कोई भी गलत परम्परा को रोकने के लिए हमें पहल करनी पड़ती है। अट्टा-सट्टा के वैवाहिक दुष्परिणामों को जानकर इस प्रक्रिया को किसी हालत में न अपनाएं, यह प्रयास हर माता-पिता को करना है।
* अनेक माता-पिताओं का यह मानना है कि जब पुत्र के विवाह के लिए सारे प्रयास असफल हो जाता है, तब उन्हें मजबूरन अट्टा-सट्टा कर, अपने पुत्र का विवाह करना पड़ता है। तो उनसे निवेदन इतना है कि वे जितने सक्रिय और सचेष्ट अपने पुत्र के विवाह के लिए है, उतने ही सचेष्ट और सतर्क उन्हें अपनी कन्या के लिए भी होना चाहिए। ये देखें कि अट्टा-सट्टा के कारण उनकी पुत्री का कहीं अहित तो नहीं हो रहा है। कहीं वह बेमेल विवाह का शिकार तो नहीं हो रही है।

जो लोग मन को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं, उनके लिए मन शत्रु के समान कार्य करता है।

राधेश्याम स्वामी, नागौर के विचार

अट्टा-सट्टा समस्या का निवारण दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से ही सम्भव है। प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचना होगा कि मेरी कन्या के लिए मैं एक सुयोग्य वर की तलाश करूंगा और यह बात हमारे धर्म और संस्कृति में है भी। हर पिता अपनी कन्या के लिए अनुकूल वर की तलाश करता है। समाज के प्रबुद्धजनों से निवेदन करूंगा कि वे कन्या के लिए आचरण युक्त, गुण-संस्कार से शीलवान वर चुनने की बात हर समाजबंधु को कहे। यह है कि अपने पुत्र को हर व्यक्ति संस्कारवान, गुणवान और सुयोग्य बनाने का प्रयास करे। उसके अंदर मौजूद गुणों के अनुरूप ही उचित समय पर उसका विवाह करे। आजकल पिताओं को यह डर सताने लगा है कि मेरे पुत्र का विवाह नहीं होगा, इस अविश्वास में वह अपने पुत्र की शादी के लिए अपनी कन्या का विवाह बेमेल लड़के के साथ कर देता है। बेमेल विवाह की परणिति विवाह-विच्छेद के साथ होती है, इसका असर उस परिवार की मानसिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर बड़ा खराब पड़ता है। मेरा सुझाव है कि समाज के सभी प्रबुद्ध नागरिकों को इस विषय पर एक चिंतन शिविर रखना चाहिए और उन्हें हर व्यक्ति को यह प्रण करवाना चाहिए कि मैं अपनी कन्या का विवाह उचित उम्र का होने पर एक सुयोग्य वर के साथ ही करूंगा। भले ही मेरे पुत्र का विवाह न हो। तभी इस विकृति को समाप्त किया जा सकता है।

लालचन्द स्वामी, धोलिया के विचार

अट्टा-सट्टा की समस्या के मुख्य कारण परिवार की आर्थिक स्थिति, समाज के प्रति जागरुकता की कमी और परिवार में आपसी फूट है।

1. यदि हम केन्द्रीय संस्थान के माध्यम से आर्थिक स्थिति से कमजोर लड़के-लड़कियों को उच्च शिक्षा दिलाने में मदद करें तो बेरोजगारी दूर होकर आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। सम्पन्न और योग्य व्यक्ति से हर कोई रिश्ता करना चाहेगा।
2. आज के इस एडवांस युग में, हमारा समाज आधुनिक तकनीक को काम में नहीं ले रहा है। वेबसाइट बनाकर विवाह-योग्य लड़के-लड़कियों के डेटा ऑनलाइन उपलब्ध कराए जाने चाहिए। इससे जागरुकता आएगी।
3. आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में केवल आर्थिक सम्पन्नता को ही जीवन का लक्ष्य मान लिया गया है। इसके कारण हम अपने नजदीकी रिश्तेदारों से सघन सम्पर्क नहीं रखते है, आपस में बहुत कम आते-जाते हैं। संकीर्ण मानसिकता के कारण हम केवल अपने घर-परिवार तक सिमट गए हैं। बुजुर्गों का ख्याल नहीं है, पहले वे ही बच्चों के रिश्ते किया करते थे। पहले दाना-नाना रिश्ता कर देते और सगे पिता को भी बाद में पता चलता।
4. अट्टा-सट्टा के सभी पहलुओं पर एक-एक कर निराकरण खोजने की जरुरत है। अगर यह समस्या समाज के लोगों ने पनपायी है तो इसका निराकरण भी समाज के लोगों द्वारा ही सम्भव है। किसी भी गलत परम्परा पर जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी रोक लगा देनी चाहिए।

सबकुछ मिला है हमको फिर भी सब्र नहीं है।
बरसों की सोचते है, और पल की खबर नहीं है।

पुखराज स्वामी, राठील के विचार

अट्टा-सट्टा विवाह की समस्या को दूर करने के लिए हमें इस समस्या के कारण को खोजना होगा, क्योंकि जब तक बीमारी के कारण का पता नहीं चलता है, तब तक उसका इलाज संभव नहीं होता।

वर्तमान समय में 80 प्रतिशत लड़किया स्नातक होती है, भले ही उनकी शिक्षा का स्तर कैसा ही हो लेकिन माता-पिता की नजर में वह पढ़ी-लिखी लड़की है और घरवाले चाहेंगे कि मेरी लड़की को कोई नौकरीवाला लड़का मिले। इस कारण लड़की की उम्र बढ़ती जाती है। उसकी उम्र 26-27 से अधिक हो जाती है। अब उसकी वजह से उसका भाई अगर कुंवारा है तो उसके पिता को चिंता होनी स्वाभाविक है, उसे अपनी लड़की देकर अपने लड़के के लिए वधू लेनी है। लड़के के पिता को अट्टा-सट्टा करना पड़ेगा। नौकरिया सीमित है जरुरी नहीं हर किसी को मिले। दूसरी ओर लड़कों की आर्थिक मजबूरी अथवा उसकी स्वयं की लापरवाही पढ़ाई छुड़वा देती है।

इस समस्या का समाधान, इसके कारण में ही छिपा हुआ है। हमें शिक्षा पर जोर देना होगा। शिक्षा भी रोजगार परक। पढ़-लिखकर आर्थिक रूप से सबल लड़के के रिश्ते स्वयं चलकर आते हैं। लड़कों को चाहिए कि वे केवल नौकरी की ही तलाश न करे, छोटे-मोटे व्यवसाय से जुड़कर भी वे अपनी उन्नति कर सकते हैं। बेरोजगार लड़के का पिता अट्टा-सट्टा करने को मजबूर होता है।

समाज को लड़का-लड़की को अपना मनपसंद जीवनसाथी चुनने के लिए एक मंच भी उपलब्ध कराना चाहिए। अभी यह समस्या प्रारम्भिक अवस्था में है, समाज के जागरूक जन को अभी इसे इसके निराकरण के उपाय खोजने शुरु करने चाहिए।

श्रीरामदास गुसांईसर के विचार

बिल्कुल भयानक समस्या है अट्टा-सट्टा। इसके जिम्मेदार हम सब हैं। इसके पीछे हमारी स्वार्थी मानसिकता काम कर रही है। हम घर में बहु लाने की खातिर अपनी ही बच्ची का जीवन दाव पर लगा देते हैं। केवल आत्मविश्वास की कमी के कारण पुत्र और पुत्री दोनों का जीवन बरबाद कर देते हैं।

बंधुओं, हम एक धर्म पथ पर चलनेवाले सम्प्रदाय से हैं, हमारा धर्म कहता है कि जब बेटी विवाह योग्य हो जाए तो पूरी निष्ठा से उसके योग्य वर और घर खोजकर उसका विवाह कर देना चाहिए। जब हम अपने धर्म का आत्मविश्वासपूर्वक पालन करेंगे तो समस्या का समाधान स्वत: ही हो जाएगा। विवाह योग्य बच्चियों का रिश्ता जब हम सब स्वयं करेंगे तो बच्चों का स्वत: हो जाएगा। हमारे यहां लिंगानुपात जैसी कोई समस्या नहीं है।

एक छोटा सा उदाहरण है कि हम लोग बेटों के विवाह की चिंता में बेटियों का विवाह नहीं कर रहे हैं, तो दूसरे लोग भी ऐसा ही कर रहे हैं, जब सब स्वस्थ ढंग से रिश्ता करते रहेंगे तो कोई बाधा उपस्थित नहीं होगी। सबको आत्मविश्वास से पहल करनी है।

संतान के विवाह को लेकर अपने भीतर उत्पन्न हुए अविश्वास को हमें जड़ से खत्म करने की आवश्यकता है। समाज के साथ पारस्परिकता बढ़ाएं, आपके बच्चों के अनुकूल विवाह होने में कोई बाधा नहीं आयेगी।

डर आपके समय की बर्बादी के अलावा कुछ भी नहीं कर सकता है।

प्रेमदास स्वामी, खिंयाला के विचार

वर्तमान समय में हमारा धनावंशी समाज जो कि एक पारम्परिक धार्मिक समाज है, में भी अट्टा-सट्टा विवाह तथा दुष्परिणाम स्वरुप छुटापा जैसी समस्या होने लगी है। हमें समाज के उन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए कि क्या कारण है एक धार्मिक और शिष्ट समाज होने के बावजूद हम कई प्रकार की उपरोक्त परम्पराओं के शिकार बनते जा रहे हैं। हम तो लोगों को धर्म पथ पर चलने के संस्कार सिखाया करते थे।

कोई भी समाज जाति के आधार पर पूजनीय नहीं हो सकता। श्रेष्ठ देवीय गुणों को अपने आचरण में लाकर ही वह महान और पूजनीय बन सकता है। दु:खी मन से कहना पड़ रहा है कि हमारा समाज अपनी धर्म परम्पराओं से कटता जा रहा है।

हम तो अपने गुरु को ही भूलते जा रहे हैं तथा अनेक भ्रांतियों के शिकार हैं। अब तक धनावंशी समाज का गौरवमयी इतिहास भी नहीं लिखा गया है। हमें अपने गुरु स्थान पर बैठकर अट्टा-सट्टा जैसी विसंगति को सुलझाना चाहिए। आज समाज में अट्टा-सट्टा का जहर फैल रहा है, उससे हर माता-पिता सहमा हुआ है, अगर किसी व्यक्ति के केवल बेटे ही है और बेटियां नहीं है तो, वह उनके विवाह के लिए सशंकित है। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। योग्य संतान के विवाह में कैसी बाधा?

श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़ के विचार

शिक्षा में असमानता ही इस अट्टा-सट्टा कुरीति का प्रमुख कारण है। हमारे समाज का आर्थिक पिछड़ापन इसका जिम्मेवार है। पुत्र घर की हालात को देखते हुए अध्ययन को बीच में छोड़कर काम में लग जाता है। यही निर्णय उसको अयोग्य बना देता है। घर की स्थिति में तो सुधार हो जाता है। लड़का सोचता है, मैं तो नहीं पढ़ा पर बिचारी बहन तो पढ़ ले। बहन पढ़ लेती है। बहन-भाइयों की विवाह योग्य उम्र होने पर पता चलता है कि बहन तो योग्य है, पर भाई अधपढ़ा है। तब लड़की के लिए तो रिश्ते आते हैं पर भाई के लिए नहीं। ऐसी स्थिति में लड़के का विवाह करना है तो पढ़ी-लिखी लड़की का रिश्ता विवशतावश बेमेल भी करना पड़ेगा। इन बेमेल विवाहों में कुछ-कुछ में दरार आने लगती है। रिश्ता टूटता है तो दो जोड़े प्रभावित होते हैं। तुम अपनी बेटी रखों-हम हमारी बेटी को नहीं भेजेंगे, ऐसे देखने में आ रहा है। परिवारों में आपसी स्नेह और सहयोग का न होना भी इन स्थितियों का उत्तरदायी है। उपेक्षा और तिरस्कार के कारण भी कटुताएं पनप रही हैं। समाज में जो उच्च वर्ग बन रहा है, उसमें यह समस्या नहीं है। वहां लड़के को लड़की और लड़की को लड़का बिना अट्टा-सट्टा के मिल रहा है। जहां अशिक्षा, आर्थिक आधार कमजोर या बेरोजगार लड़का है, वहां यह समस्या अधिक है।

सुरेन्द्रकुमार बेनीवाल, दोतीणा के विचार

अभी तो अट्टा-सट्टा की परम्परा शुरुआती दौर में है, पर वह बढ़ती रही तो आगे जाकर खतरनाक साबित होगी क्योंकि यह कोई अच्छी संस्कृति का परिचायक नहीं है। यह तो एक तरह का सौदा हुआ। ऐसे बेमेल विवाह अधिक दिनों तक नहीं टिकते। आखिर दो परिवारों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। कहावत है दुविधा में दोनो गए, माया मिली न राम। बेटे और बेटी दोनों का घर उजड़ जाएगा।

इस परम्परा में बेटे-बेटी का दोष नहीं है। कसूर केवल माँ-बाप का है, जिसने रिश्ता करते समय बेटे और बेटी की योग्यता को नजरअंदाज किया। अपने स्वार्थ के लिए बेटी को नर्क में ढकेल दिया। ऐसे रिश्ते ज्यादा दिन टिकते नही और बाद में शर्मिन्दा होना पड़ता है। जिस दिन पिता यह सोच लेगा कि भले ही मेरा लड़का कुंआरा बैठा रहे, पर मैं अपनी बेटी का रिश्ता जांच-परख कर करुंगा और मेरे रिश्तेदारों से सलाह मशविरा करके करुंगा। रही बात लड़के की तो अगर लड़के में योग्यता होगी तो रिश्ता अपने आप घर चलकर आएगा।

आँखे बंद करने से मुसीबत नहीं टलती और मुसीबत आये बिना आँखे नहीं खुलती।

सम्प्रदाय के आधार तत्त्व और धनावंश

■■■ चेतन स्वामी

●●●●●

अनेक वैरागी सम्प्रदायों की पंक्ति में ही धनावंशी सम्प्रदाय है। प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय की अपनी धार्मिक संहिताएं, आचरण और नियम बने होते हैं। उनका पालन एक अनुशासन के साथ किया जाता है। सम्प्रदाय के चार प्रमुख पाद (पैर) होते हैं, जिन पर वह खड़ा रहता है। वे चार पाए इस प्रकार हैं। (1) सम्प्रदाय के प्रवर्तक (2) सम्प्रदाय के महंत (3) सम्प्रदाय के मंदिर और (4) सम्प्रदाय का साहित्य।

आठवीं शताब्दी में हुए आचार्य शंकर ने अपने अद्वैतवाद दर्शन के माध्यम से एक नूतन धार्मिक क्रांति का सूत्रपात किया। लेकिन इसके तीन सौ वर्ष बाद रामानुज ने शंकर के अद्वैतवाद का वैष्णव दृष्टिकोण से संशोधन कर विशिष्टाद्वैती धारा का प्रवर्तन किया। इससे लाभ यह हुआ कि अद्वैतवाद की भित्ति पर ही सगुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग प्रशस्त हुआ। धार्मिक विचारकों के दर्शन को चुनौतियां मिलती रहती है, आगे चलकर बारहवीं शताब्दी में मध्वाचार्य ने रामानुज से भी एक कदम आगे बढ़कर द्वैतवाद का प्रवर्तन किया।

1. सम्प्रदाय के प्रवर्तक : किसी ने सम्प्रदाय को बनाया होता है। किसी गुरु की भक्ति, दार्शनिक विचारधारा, उनके कृत्य, उपदेश, निज व्यवहार और अनुयायियों की श्रद्धा सब मिलकर सम्प्रदाय के प्रवर्तक को प्रतिष्ठित करते हैं। उदाहरण के लिए मध्य युग में दक्षिण के संत रामानुजाचार्य ने अपनी धार्मिक विचारधारा के द्वारा देश के लोगों के मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ी। उससे पहले आठवीं शताब्दी में हुए आचार्य शंकर ने अपने अद्वैतवाद दर्शन के माध्यम से एक नूतन धार्मिक क्रांति का सूत्रपात किया। लेकिन इसके तीन सौ वर्ष बाद रामानुज ने शंकर के अद्वैतवाद का वैष्णव दृष्टिकोण से संशोधन कर विशिष्टाद्वैती धारा का प्रवर्तन किया। इससे लाभ यह हुआ कि अद्वैतवाद की भित्ति पर ही सगुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग प्रशस्त हुआ। धार्मिक विचारकों के दर्शन को चुनौतियां मिलती रहती है, आगे चलकर बारहवीं शताब्दी में मध्वाचार्य ने रामानुज से भी एक कदम आगे बढ़कर द्वैतवाद का प्रवर्त्तन किया। इसी क्रम में पन्द्रहवी शताब्दी में वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत की नींव रखी। उपरोक्त तीनों ही विचारक दक्षिण भारत से थे। तीनों के अपने सम्प्रदाय विकसित हुए जो आज भी विद्यमान है। दक्षिण के ही एक अन्य आचार्य निम्बार्क हुए इन्होंने सनकादिक सम्प्रदाय की स्थापना की। ये सभी आचार्य वैष्णव मत के थे इन्हें शंकर के निर्गुण ब्रह्म का प्रतिपादन स्वीकार नहीं था। इनके मतों का प्रादुर्भाव शंकराचार्य के निर्गुणवादी अद्वैत मत की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। शंकर के अद्वैत मत में जीव और ईश्वर की एकता का प्रतिपादन हुआ है, इसमें ईश्वर की अवतार लीलाओं को कोई स्थान नहीं मिल रहा था। इसी प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी में रामानुज की परम्परा में ही रामानंद हुए, उन्होंने रामावत मत की स्थापना की। रामानंद के 12 प्रमुख शिष्य थे, जिनमें धना भी एक शिष्य थे। गुरु आज्ञा से रामानंद के सभी शिष्यों ने अपनी-अपनी दार्शनिक विचारधारा तथा मन से अपने अनुयायियों के मध्य अपने विचार रखे। उनके विचारों

क्रोध में भी शब्दों का चुनाव ऐसा होना चाहिए,
कल जब गुस्सा उतरे तो खुद की नजरों में शर्मिंदा ना होना पड़े।

से प्रभावित उनके शिष्यों के भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय बने। धनाजी से धनावंश सम्प्रदाय बना।

2.सम्प्रदाय के महंत : सम्प्रदायों में महंतीय परम्परा बहुत ही प्राचीन है। महंत जिस सम्प्रदाय की धार्मिक प्रवृत्तियों को विकसित करने तथा समाज को प्रबोधित करने का कार्य करते हैं। गुरु प्रणीत विचारधारा को तथा क्षेत्रीय गुरु के रूप में पंथ की संरक्षा का कार्य करते हैं। महंत सभी सम्प्रदायों में होते हैं। धनावंश में भी महंतों की उच्च परम्परा रही है। इन्हें समाज में बड़ा मान-सम्मान प्राप्त था। महंत ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण निहंग होते हैं। बताया जाता है कि किसी समय धनावंश में 35 महंत गद्दियां थी, जिनमें बहुत सारी अनेक कारणों से सुस्ती का शिकार हो गई। महंत द्वारों की पुनर्स्थापना तथा नए महंत बनाए जाने की भी आवश्यकता है।

सभी धनावंशी मंदिर वैष्णव अवतारों यानि ठाकुरजी के हैं। कतिपय दूसरे देवताओं के हो सकते हैं। मंदिर भी अपनी पंथ की धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप सेवा-पूजा-प्रवचन, धार्मिक कार्यक्रम, समारोह की आयोजना करते हैं। धनावंश के मंदिरों को राज की ओर से भरपूर संरक्षण मिला तथा राजाओं ने मंदिरों को पेटिया तथा भूमि प्रदान की। बड़ी कृषि जोत इसलिए दी गई ताकि उन मंदिरों की सेवा-पूजा सुचारू रूप से की जा सके तथा पुजारी का भी भरण पोषण हो सके। मंदिरों की इन भूमियों को डोळी भूमि की संज्ञा दी गई।

3. सम्प्रदाय के मंदिर : धार्मिक सम्प्रदायों में मंदिरों की बहुतायत रहती है। इन मंदिरों को तत्कालीन राज और समाज का संरक्षण रहा करता था। धनावंशी मंदिरों की संख्या अनुमानत: आठ सौ के लगभग बताई जाती है। सभी धनावंशी मंदिर वैष्णव अवतारों यानि ठाकुरजी के हैं। कतिपय दूसरे देवताओं के हो सकते हैं। मंदिर भी अपनी पंथ की धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप सेवा-पूजा-प्रवचन, धार्मिक कार्यक्रम, समारोह की आयोजना करते हैं। धनावंश के मंदिरों को राज की ओर से भरपूर संरक्षण मिला तथा राजाओं ने मंदिरों को पेटिया तथा भूमि प्रदान की। बड़ी कृषि जोत इसलिए दी गई ताकि उन मंदिरों की सेवा-पूजा सुचारू रूप से की जा सके तथा पुजारी का भी भरण पोषण हो सके। मंदिरों की इन भूमियों को डोळी भूमि की संज्ञा दी गई। विगत वर्षों में ये डोळियां ठाकुरजी (मूर्ति) के नाम किए जाने से पुजारी वर्ग को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ये जमीनें पुजारियों के नाम होनी चाहिए, इसके लिए वे संघर्षरत हैं।

4. सम्प्रदाय का साहित्य: किसी समुदाय की वास्तविक पहचान उसके धार्मिक दार्शनिक और आध्यात्मिक साहित्य से ही संभव है। साहित्य के निर्माण से पंथ के लोग तथा अन्य भाविक भी उस पंथ की मननीय बातों से प्रभावित हाते हैं। धनावंश में साहित्य लेखन एवं संरक्षण के प्रति अवहेलना का दृष्टिकोण रहा है। फलस्वरूप बड़ी मात्रा में साहित्य नहीं है, फिर भी जोधपुर के महंत बद्रीदास गोलिया की धनाजी पर एक अच्छी पुस्तक प्रकाशित है। उनकी कुछ कृतियां अप्रकाशित है। बजरंगदासजी ने प्रभूत मात्रा में धार्मिक पदों का लेखन किया है, जिसकी संख्या पांच हजार से भी अधिक है, पर अप्रकाशित है। इन पंक्तियों के लेखक द्वारा धनावंशी संहिता प्रकाशित है। जोधपुर के डॉ. शैलेन्द्र स्वामी भी धनावंश के प्रतिष्ठित लेखक हैं, उन्होंने संत साहित्य पर कार्य किया है तथा धनाजी पर लेख लिखे हैं।

मुश्किलें हमारी जिन्दगी में हमें कामयाब करने आती हैं।

धनावंश की सच्ची बात

■■■ चेतन स्वामी

धनावंश के पंथ प्रवर्तक
भक्त शिरोमणि श्रीधनाजी महाराज

लोग हमें अज्ञानी समझते हैं। सदैव तथ्यात्मक ढंग से अपनी बात कहनी चाहिए। जो लोग आध्यात्मिक साहित्य का तथा भक्तिकाल में उत्पन्न हुए पंथ सम्प्रदायों का साहित्य नहीं पढ़ते, वे न अपने पंथ के बारे में जान सकते है और ना ही दूसरे ही पंथों के बारे में जानकारी रख सकते हैं। धनावंश के संस्थापक धनाजी महाराज थे। इसमें किसी भी तरह का कोई संशय नहीं है।

जो व्यक्ति अपने जीवन में मिथ्या आचरण और पाखंड को महत्त्व देता है, वह कभी भी सत्यान्वेषी नहीं हो सकता। सत्य को ईश्वर का रूप जानना चाहिए। सत्य की खोज के लिए सतत् प्रयत्नशील रहनेवाले जन ही मरजीवा बनकर खरी आब के मोती खोजकर ला पाते है।

हमारा धनावंश, एक धार्मिक पंथ है। बोलने में जय ठाकुरजी का सम्बोधन करते हैं और ठाकुरजी भगवान के सान्निध्य में रहते हैं। भगवद् लीला कथाओं को जानने समझने तथा संतों–भक्तों के चरित्र समझने–पढ़ने का हमारा जातीय स्वभाव रहा है। हम दूसरे भक्तों के चरित्र पढ़ें और हमारे समाज के संस्थापक के प्रति दुराव रखें। उनके बारे में किंचित भी जानने का प्रयास न करना, यह हमारे लिए न शोभाजनक कहा जा सकता और न ही प्रीतिकर।

हर धार्मिक सम्प्रदाय अपने पंथ प्रवृत्तक के प्रति कृतज्ञ होता है उपकृत भी। यह होना भी चाहिए कि अपने सम्प्रदाय प्रवृत्तक के प्रति जितनी अधिक हो सके, उतनी जानकारी रखनी चाहिए। यह सच्ची और ठोस बात है कि धनावंश एक धार्मिक सम्प्रदाय है तो, बिना किसी पंथ प्रवृत्तक के यह प्रारम्भ ही नहीं हो सकता।

हम जिस ज्ञान विज्ञान के युग में जी रहे हैं, वहां हमें हमारे पंथ प्रवर्तक के सम्बन्ध में मिथ्या बातों को तनिक भी स्थान नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे हमारी सत्यान्वेषी वृत्ति को ठेस लगती है, तथा हमारे ही जैसे दूसरे सम्प्रदाय हमारी खिल्ली भी उड़ा सकते हैं। हमें बेवजह किसी के उपहास का कारण नहीं बनना चाहिए।

हम में से कुछ सज्जन धनावंश के पंथ प्रवृत्तक के रूप में बिना जाने किसी कल्पित घनेष्ठा का नाम लेते हैं, उन्हें नहीं मालूम घनेष्ठा कोई ऋषि नहीं थे। चन्द्रमा की 27 पत्नियों में से एक का नाम धनेष्ठा है, जिसे हम कृतिका, रोहिणी आदि की भांति एक नक्षत्र के रूप में जान सकते हैं।

इसी प्रकार कुछ और भाई धन्वंतरीजी का नाम लेते हैं। पर वे सामान्य सा ज्ञान नहीं रखते कि देवताओं और दानवों के द्वारा जब समुद्र मंथन किया गया तो उसमें से निकलनेवाले चौदह रत्नों में से एक धन्वंतरी भगवान थे, और वे अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। यह सृष्टि के आरम्भ की कथा है। इसका धनावंश से क्या लेना–देना।

कुछ और भाई अज्ञानतावश न जाने क्या–क्या नाम लेते रहते हैं। ध वर्णन को लेकर कष्ट कल्पनाएं करते हैं। कभी धनुरऋषि, कभी कोई धन्य ऋषि। भाइयों, इन सब से हमारी हंसी उड़ती है। लोग हमें अज्ञानी समझते हैं। सदैव तथ्यात्मक ढंग से अपनी बात कहनी चाहिए। जो लोग आध्यात्मिक साहित्य का तथा भक्तिकाल में उत्पन्न हुए पंथ सम्प्रदायों का साहित्य नहीं पढ़ते, वे न अपने

शब्द तो यदा–कदा चुभते ही रहते हैं सबके, जब मौन चुभ जाये किसी का तो संभल जाना चाहिए।

पंथ के बारे में जान सकते है और ना ही दूसरे ही पंथों के बारे में जानकारी रख सकते हैं। धनावंश के संस्थापक धनाजी महाराज थे। इसमें किसी भी तरह का कोई संशय नहीं है। इसके अनेक प्राचीन प्रमाण उपलब्ध है। स्वयं धनाजी महाराज के अनेक भक्ति प्रसंगों को सभी भक्तमालों में बहुत सम्मान के साथ उल्लेखित किया गया है। संतों भक्तों पर परची लिखने वाले प्रसिद्ध अनन्तदास ने धनाजी की परची के अन्तर्गत एक पद में यह लिखा है–

हर गुण साध एक कर पूजो

कबहुं भाव धरो मत दूजो

सिंवरो राम साधपण सेवो

अरूं भूखां कूं भोजन देवो।

अर्थात् धनाजी महाराज ने अपने गुरु रामानन्दजी महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए उस समय के अपने अनुयायी जाटों को दो बातें प्रमुख रूप से कही कि एक तो जो निर्मल मन के हैं, उन्हें साधपन अपनाना चाहिए। गौर करें जाटों से धनाजी महाराज कह रहे हैं कि तुम्हें साधपन अपनाना चाहिए अर्थात् आपको स्वामी बनकर प्रभु भक्ति अपनानी चाहिए। दूसरी बात उन्होंने कही कि यह साधुता गृहस्थ में रहकर ही रखनी है और अपना कृषि कार्य पूर्ववत करते हुए भूखे लोगों को भोजन देना है अर्थात किसान को अपना अन्नदाता स्वरूप कायम रखना है।

उल्लेखनीय है कि धनाजी महाराज ने प्रथम बार धनावंशियों को स्वामी शब्द प्रदान किया जो आज तलक समाज में व्यवहृत हो रहा है। जब हम धनाजी महाराज के जीवन चरित्र का अध्ययन करते है तब पाते हैं कि उनके जीवन में कृषि कार्य करते हुए भी दयालुता बहुत अधिक थी। भक्तमालों में उल्लेख आया है कि एक बार ऋषिकेश से चली साधुओं की टोली धना के घर का अन्न ग्रहण करने के लिए धुआं गांव में आई। इधर धनाजी महाराज पहली बरसात के बाद अपने खेत को बोने के लिए एक महाजन से उधार लिए हुए बीज को लेकर जा रहे थे। रास्ते में साधुओं की टोली ने धना से ही पूछा कि भक्त धना का गांव कितनी दूर है। इस पर धना ने पूछा कि आप धना के पास क्यों जा रहे है? तब साधुओं ने उत्तर दिया कि हम धना का अन्न ग्रहण करने जा रहे हैं क्योंकि उसके पवित्र अन्न को ग्रहण कर हम भी बाहर–भीतर से और पवित्र हो जायेंगे, तब धना ने बताया कि वह ही धना है और अब आपको गांव जाने की जरूरत नहीं है। मेरे पास अन्न है और मैं आप सबको एक–एक मुट्ठी अन्न प्रदान कर सकता हूँ। दयालु धना ने खेत में बोने के लिए अन्न रूप जो बीज ले रखा था, वह सब साधुओं में बांट दिया। दुआ देते हुए साधु वहाँ से चले गये। ऐसे प्रभु भक्त धना हमारे धनावंश के प्रवर्तक थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को धनावंशी बनाया और सहज रूप से प्रभु भक्ति को अपनाने का संदेश प्रदान किया। धनावंश की परम्परा तब से चली आ रही है।

सभी जानते हैं कि धनाजी महाराज एक निस्पृह सन्त थे। उन्होंने अपनी गुरु आज्ञा का पालन करते हुए अपने अनुयायियों से ठाकुर पुजा के सुगम मार्ग को अपनाने का आग्रह किया और बड़ी सरलता से हमारे पूर्वज उनके अनुयायी बने भी और ठाकुर पूजा करते हुए अनेक मंदिरों के पूजन का कार्य सम्भाला। दूसरे सभी समाजों में ईश्वर भक्त के रूप में एक जातीय स्वरूप को स्थापित किया। हमारे अनेक मन्दिर है, वहीं 35 से अधिक महंतद्वारे भी समय–समय पर कायम हुए। उनके माध्यम से भी सम्प्रदाय को आगे बढ़ाने का कार्य किया गया। यह बात अलग है कि कालान्तर में कुछ शैथिल्य आ जाने के कारण आज हमारे वे महंतद्वारे प्रखर रूप में विकसित नहीं हो पाये हैं। पर समाज चाहे तो उन सभी महंतद्वारों को पुन: सक्रिय कर सकता है। समाज की धार्मिक पहचान ही इसकी वास्तविक पहचान है। इस पहचान को हमें किसी रूप में भी मिटने नहीं देना चाहिए। सभी लोगों को संगठित होकर बहुत बड़े स्वामी पंथ धनावंश को एक अग्रणीय पंथ की छवि प्रदान करने का यत्न करना चाहिए।

●●●●●

वक्त वो तराजु है जनाब जो बुरे वक्त में अपनो का वजन बता देता है।

आयुर्वेद के उपयोगी नुस्खें

1. कान दर्द – प्याज पीसकर उसका रस कपड़े से छान लें। फिर उसे गरम करके 4 बूंद कान में डालने से कान का दर्द समाप्त हो जाता है।

2. दांत दर्द – हल्दी एवं सेंधा नमक महीन पीसकर, उसे शुद्ध सरसों के तेल में मिलाकर सुबह-शाम मंजन करने से दांतों का दर्द बंद हो जाता है।

3. दांतों के सुराख – कपूर को महीन पीसकर दांतों पर उंगली से लगाएं और उसे मलें। सुराखों को भली प्रकार साफ कर लें। फिर सुराखों के नीचे कपूर को कुछ समय तक दबाकर रखने से दांतों का दर्द निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

4. बच्चों के पेट के कीड़े – छोटे बच्चों के पेट में कीड़े हों तो सुबह एवं शाम को प्याज का रस गरम करके 1 तोला पिलाने से कीड़े अवश्य मर जाते हैं। धतूरे के पत्तों का रस निकालकर उसे गरम करके गुदा पर लगाने से चुन्ने (लघु कृमि) से आराम हो जाता है।

5. गिल्टी का दर्द – प्याज पीसकर उसे गरम कर लें। फिर उसमें गो-मूत्र मिलाकर छोटी-सी टिकरी बना लें। उसे कपड़े के सहारे गिल्टी पर बांधने से गिल्टी का दर्द एवं गिल्टी समाप्त हो जाती है।

6. पेट के केंचुए एवं कीड़े – 1 बड़ा चम्मच सेम के पत्तों का रस एवं शहद समभाग मिलाकर प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं को पीने से केंचुए तथा कीड़े 4-5 दिन में मरकर बाहर निकल जाते हैं।

7. छोटे बच्चों को उल्टी दस्त – पके हुए अनार के फल का रस कुनकुना गरम करके प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं को 1-1 चम्मच पिलाने से शिशु-वमन अवश्य बंद हो जाता है।

8. कब्ज दूर करने हेतु – 1 बड़े साइज का नींबू काटकर रात्रिभर ओस में पड़ा रहने दें। फिर प्रातःकाल 1 गिलास चीनी के शरबत में उस नींबू को निचोड़कर तथा शरबत में नाममात्र का काला नमक डालकर पीने से कब्ज निश्चित रूप से दूर हो जाता है।

9. आग से जल जाने पर – कच्चे आलू को पीसकर रस निकाल लें, फिर जले हुए स्थान पर उस रस को लगाने से आराम हो जाता है। इसके अतिरिक्त इमली की छाल जलाकर उसका महीन चूर्ण बना लें, उस चूर्ण को गो-घृत में मिलाकर जले हुए स्थान पर लगाने से आराम हो जाता है।

10. कान की फुंसी – लहसुन को सरसों के तेल में पकाकर, उस तेल को सुबह, दोपहर और शाम को कान में 2-2 बूंद डालने से कान के अंदर की फुंसी बह जाती है अथवा बैठ जाती है तथा दर्द समाप्त हो जाता है।

11. कुकुर खांसी – फिटकरी को तवे पर भून लें और उसे महीन पीस लें। तत्पश्चात 3 रत्ती फिटकरी के चूर्ण में समभाग चीनी मिलाकर सुबह, दोपहर और शाम को सेवन करने से कुकुर खांसी ठीक हो जाती है।

12. पेशाब की जलन – ताजे करेले को महीन-महीन काट लें। पुनः उसे हाथों से भली प्रकार मल दें। करेले का पानी स्टील या शीशे के पात्र में इकट्ठा करें। वही पानी 50 ग्राम की खुराक बनाकर 3 बार (सुबह, दोपहर और शाम) पीने से पेशाब की कड़क एवं जलन ठीक हो जाती है।

13. फोड़े – नीम की मुलायम पत्तियों को पीसकर गो-घृत में उसे पकाकर (कुछ गरम रूप में) फोड़े पर हल्के कपड़े के सहारे बांधने से भयंकर एवं पुराने तथा असाध्य फोड़े भी ठीक हो जाते हैं।

14. सिरदर्द – सोंठ को बहुत महीन पीसकर बकरी के शुद्ध दूध में मिलाकर नाक से बार-बार खींचने से सभी प्रकार के सिरदर्द में आराम होता है।

15. पेशाब में चीनी (शकर) – जामुन की गुठली सुखाकर महीन पीस डालें और उसे महीन कपड़े से छान लें। अठन्नीभर प्रतिदिन 3 बार (सुबह, दोपहर और शाम) ताजे जल के साथ लेने से पेशाब के साथ चीनी आनी बंद हो जाती है। इसके अतिरिक्त ताजे करेले का रस 2 तोला नित्य पीने से भी उक्त रोग में लाभ होता है।

16. मस्तिष्क की कमजोरी – मेहंदी का बीज अठन्नीभर पीसकर शुद्ध शहद के साथ प्रतिदिन 3 बार (सुबह, दोपहर और शाम) सेवन करने से मस्तिष्क की कमजोरी दूर हो जाती है और स्मरण शक्ति ठीक होती है तथा सिरदर्द में भी आराम हो जाता है।

17. अधकपारी का दर्द – 3 रत्ती कपूर तथा मलयागिरि चंदन को गुलाब जल के साथ घिसकर (गुलाब जल की मात्रा कुछ अधिक रहे) नाक के द्वारा खींचने से अधकपारी का दर्द अवश्य समाप्त हो जाता है।

18. खूनी दस्त – 2 तोला जामुन की गुठली को ताजे पानी के साथ पीस-छानकर, 4-5 दिन सुबह 1 गिलास पीने से खूनी दस्त बंद हो जाता है। इसमें चीनी या कोई अन्य पदार्थ नहीं मिलाना चाहिए।

अहंकार बहुत भूखा होता है और इसकी सबसे बड़ी और पसंदीदा खुराक है रिश्ते।

आपके पत्र–आपकी भावनाएं

श्री धनावंशी हित पत्रिका का प्रवेशांक मिला। प्रथम बार वैरागी धनावंशी समाज की पत्रिका देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। धनावंशी महंत परम्परा पर परिचर्चा बड़ी सार्थक है। श्री ध्रुव स्वामी, हरियासर के विचार सटीक हैं। किसी समय यह परम्परा महान थी, परन्तु आज के समय में चलती नहीं दिख रही है। अधिकतर महंत गृहस्थी हो चुके हैं। विवाद भी बहुत है। अभी जिस बालक को खारिया महंत पद दिया गया है, वे आगे किस प्रकार अपने पद की गरिमा के अनुकूल कार्य कर पायेंगे, यह तो भविष्य के गर्भ में है। पत्रिका में धूम्रपान पर लिखा लेख सराहनीय है। वैष्णव समाज के जो कथावाचक हैं, उनमें धनावंशियों की संख्या बहुत कम है–धार्मिक प्रचारकों की जरुरत है। शिक्षा पर अधिक ध्यान देने की जरुरत है। हमारे लोग शिक्षा में बहुत पिछड़े हुए हैं।

• मांगीलाल स्वामी कड़वा, सुजानगढ़

जय ठाकुरजी की सा। पहली श्री धनावंशी हित पत्रिका पढ़कर हृदय गद्‌गद् हो गया। मैं अपने आप को रोक नहीं सका और डाक का इंतजार किए बिना परिव्राजक संत श्री सीतारामदासजी नागौर पधारे तो उनसे पत्रिका ले ली और उसे तुरंत पढ़ा। पत्रिका के सभी लेख उत्तम हैं। इस अच्छा सामग्री के लिए सम्पादक का आभार।

• बस्तीराम स्वामी, मेड़तासिटी

धनावंशी पत्रिका, धनावंशी स्वामी समाज के लिए पहली रोशनी की किरण है। सभी समाज बंधुओं के सहयोग से यह उत्कृष्ट भेंट समाज को अर्पित हुई है। आपके इस महान कार्य के लिए नतमस्तक हूँ। पत्रिका पढ़कर जो खुशी महसूस हुई है, उसे शब्दों में बयान नहीं कर सकता। मैं पचास धनावंशियों तक यह पत्रिका पहुंचाऊंगा।

• रघुवीर आनंद स्वामी, अहमदाबाद

श्री धनावंशी हित पत्रिका का प्रथम अंक प्राप्त कर बहुत खुशी हुई। परिवार के सभी सदस्यों द्वारा पत्रिका की बहुत सराहना की गई। आपका प्रयास स्तुत्य है। इसे आगे बढ़ाते रहें, हम आपके साथ हैं।

• छगनलाल स्वामी, पाली

धनावंशी समाज की पहली पत्रिका प्रकाशित होने पर, पूरे समाज को बधाई देता हूँ एवं श्री चेतनदासजी आपकी मेहनत और लगन को प्रणाम करता हूँ। मैं अभी इंडिया में नहीं हूँ, इसलिए मैंने पत्रिका के सभी पृष्ठों के फोटो मंगवाए और सारे पृष्ठ ध्यान से पढ़े। पत्रिका का कंटेंट बहुत ही अच्छा लगा। सारे लेख एक फ्लो (धारा) में लिखे हुए हैं, ताकि पढ़नेवाले की रुचि बनी रहे। धनावंश के सम्बंध में बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारियां दी गई है, जो इस पत्रिका के उद्देश्य को पूरा करती है। समाज के उत्थान के लिए जो चीजें आवश्यक हैं, उन्हें सही ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हमारे समाज में बहुत कुरितियां हैं, संभव है आने वाले अंकों में उन पर विस्तृत विचार प्रस्तुत होंगे। एक चीज जो सबसे अच्छी लगी, वह है समाज उत्थान के पांच प्रकल्प। इन पांचों प्रकल्पों को क्रियान्वित करने के लिए कृत संकल्पित हुआ जाए। अब समय आ गया है कुछ करने का। मेरी शिक्षा में रुचि है। इस पिल्लर (स्तम्भ) को मजबूती देना बहुत आवश्यक है। प्राइवेट नौकरी के कारण ज्यादा समय नहीं है, फिर भी मेरे स्तर पर समाज के लिए हमेशा तैयार रहूंगा।

एक बात और लिखना चाहूंगा। कई बार लोग आपके बारे में ऊल–जलूल बोल देते हैं। इन लोगों को बदलना है। अपना

पानी अमूल्य है, पर जब तक उम्मीदों पर नहीं फिरता।

समाज काफी सालों से सोया हुआ है, थोड़ा वक्त लगेगा जगने में।

• प्रेमदास स्वामी, झाड़ेली

समाज के लिए एक पत्रिका का आरम्भ हुआ, यह देखकर बहुत अच्छा लगा। क्योंकि यह एक सकारात्मक कार्य है। इसके अनेक लाभ हमें मिल सकते हैं। इसके माध्यम से कम्युनिकेशन बन सकता है। सामाजिक लेखन की भी आवश्यकता है। हम सब जानते हैं किसी ने यह कांटोभरा ताज पहना, हृदय से आभार व सुगम पथ की कामना।

• जसवंत स्वामी, बीदासर

श्री धनावंशी हित पत्रिका मिली। एक अच्छी शुरुआत है। आपका हार्दिक अभिनंदन

• भंवरलाल वैष्णव, दोतीणा

डॉ. चेतनजी, समाज की पहली मासिक पत्रिका को सम्पादित कर धनावंशी घरों तक भिजवाने की महती भूमिका निभाई, आज पत्रिका घर पर मिली। देखकर, पढ़कर मन हर्षित हुआ, आपको इस हेतु, मेरा साधुवाद व जय ठाकुरजी की सा।

• दीनदयाल वैष्णव, जोधपुर

श्री धनावंशी हित पत्रिका का पूर्ण रूप से अध्ययन किया। आपके परिश्रम का साधुवाद। ठाकुरजी, आपको और अधिक सामर्थ्य दे, जिससे धनावंशी समाज जाग्रत हो और अपनी शक्ति को पहचाने। दुख तो तब होता है जब कोई निस्वार्थ कार्य करे और लोग उनमें कमियां निकाले। खैर ये काम है, उनका। आपकी लगन और मेहनत के लिए पुन: साधुवाद।

• ध्रुवपाल स्वामी, हरियासर

बहुत-बहुत आभार, साधुवाद। आपको पढ़कर बहुत खुशी हुई। लिखने की शैली व फोटो बहुत सुंदर है।

• बनवारीलाल स्वामी, स्वामियों की ढाणी

आपके द्वारा भेजी गई 50 पत्रिकाएं पहुंच गई। पत्रिका देख-पढ़कर बहुत ही खुशी हुई। अंदर लिखी सारी सामग्री समाज हितैषी है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। कुछ लोग आप पर बेतुके आरोप लगा रहे हैं, मर्यादा की सीमा लांघ रहे हैं। समाज हितैषी काम में आपको लोगों का विरोध झेलना पड़ेगा, कठिन परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ेगा।

• प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

पत्रिका मिली। अच्छी लगी। आप इस कार्यक्रम को जारी रखें-अच्छा है।

• सुखराम स्वामी, लाडनूं

मैं पिछले दस वर्षों से चेतनदासजी स्वामी को जानता हूँ, वे बहुत लम्बे काल से धनावंशी समाज हित में समाज के लेखन, शोधकार्यों एवं सामाजिक चेतना के कार्यों में लगे हुए हैं। लगभग सुप्तप्राय समाज में धनावंश के प्रति विगत अढ़ाई सालों में हलचल मचाई है। उनके जितना धार्मिक सम्प्रदायों का अध्ययन करने वाला मुझे अपने समाज में दूसरा कोई व्यक्ति नजर नहीं आया है। चेतनदासजी एक विद्वान साहित्यकार है, इस नाते अन्य धार्मिक समाज के लोग भी उन्हें बहुत अधिक मान-सम्मान प्रदान करते है। वे उन्हें अपनी धार्मिक सभाओं में बुलवाते है। पर हमारा समाज क्या उन्हें उतना सम्मान दे पा रहा है? हमें अपनी छाती पर हाथ रखकर सोचना चाहिए कि अपने समाज में धार्मिक और सामाजिक साहित्य लिखने वाले कितने लोग है? चेतनदासजी ने पहले भी धनावंशी संहिता नामक एक पुस्तक लिखी और समाज में नि:शुल्क वितरण करवाई, इसी प्रकार यह धनावंशी हित पत्रिका भी समाज के लिए बहुत उपयोगी है। मेरे दृष्टिकोण में यह पत्रिका समाज के प्रत्येक घर में आनी चाहिए। इससे समाज का बड़ा ही भला होगा।

• वैद्य अर्जुनदास स्वामी, हरियासर

दुनियां में दो ही सच्चे ज्योतिषी हैं
मन की बात समझने वाली माँ और भविष्य को पहचानने वाला पिता।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) ⁎ मो.: 9461037562**

धनावंशीय वैष्णवता के मायने

हम सब ठाकुरजी पूजक हैं। बड़े भक्ति भाव से ठाकुरजी का पूजन–अर्चन वंदन आवश्यक है। धनावंशी भक्ति सगुण भक्ति है। भगवान के सगुण–साकार स्वरूप को हम ध्याते हैं, पूजते हैं। उन्हीं का हम गुण कथन करते हैं। सबसे पहले गुरु स्मरण, फिर भक्तवृन्द का स्मरण–वंदन। सत्संग में अन्तरंग होकर प्रभु का कीर्तन करें। भगवद् सामीप्य की यह उच्च प्रतीति है। ऐसा महसूस करें भगवान हमारे समीप खड़े है और उनका वरद्हस्त हमारे मस्तक पर है। भगवद् प्रेम में मग्न हो जाइए। भगवद् मूर्ति अंत:करण में पैठ जाए। नैमितिक सत्संग–कीर्तन आवश्यक है–दिखावे से दूर। नाता केवल आपका और ठाकुरजी का ही रहे। कलियुग में नाम स्मरण भक्ति ही उत्तम है। एक संत ने कहा जे न भजन्ते नारायना, तिनका मैं न करूं दरसना।

याद रखें–दृष्टि में भगवान को रखेंगे तो सृष्टि में भी भगवान ही नजर आएंगे। धनावंश की शिष्ट पहचान इसकी धार्मिक छवि से बने है। इसलिए सभी धनावंशी भाइयों से मेरा यह अत्यधिक आग्रह है कि वे अपने घर का वातावरण धार्मिक और आध्यात्मिक बनाएं। अपने घर में धार्मिक ग्रंथों को स्थान देवें तथा घर के सभी सदस्यों से यह आग्रह करें कि वे नियमित रूप से उन ग्रंथों का स्वाध्याय करे। स्वाध्याय से दृष्टि और मन दोनों निखरता है। बुद्धि में परिपक्वता आती है। एक धार्मिक सम्प्रदाय के सभी लोगों के लिए यह आवश्यक बन जाता है कि वे अपने समाज की सभी परम्पराओं को सत्यान्वेषण के साथ जाने। जब तक अध्ययन नहीं होगा, अपने ही समाज को ठीक से समझ नहीं पायेंगे और न ही उसकी धार्मिक बुनियाद को जान पायेंगे। अपने कुल के धार्मिक उत्स को जानना बहुत जरुरी है।

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

उत्तम से सर्वोत्तम वही हुआ है जिसने आलोचनाओं को सुना और सहा है।

Mahesh Sales Corporation

Dealers of DYES & CHEMICALS

4/40, Kamla Nehru Nagar, Pali-Marwar (Raj.)

Mahesh Swami
9414288388
9460019800

Sister Concern

Mahesh Enterprises

Pali-Marwad (Raj.)

ओमप्रकाश स्वामी

मु.पो. श्यामगढ़ वाया मारोठ
जिला-नागौर

Govind Swami
M.: 9849615977

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं
आशाराम स्वामी, काणूता (सुजानगढ़)

MANGLAM STONE

Sy. No. 37, Khazipur Village, Mdl. & Dist. Karimnagar (T.S.)
mangalamstone2016@gmail.com

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।